पूर्व-जन्म-स्मृति

एक आध्यात्मिक विवेचन

★

राजेन्द्र

प्रकाशक –
श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार
कृष्णगङ्गा, मथुरा।

व्यय-विवरण पुस्तक २०००

कागज ११ रिम ग्लेज २४ पौंड	१=६॥।)
कागज कवर १/२ रिम	२६।)
छपाई (मुख्य पृष्ठ सहित)	११०)
ब्लाक तथा बाइण्डिङ्ग	३०)
फुटकर व्यय	३०)
रजिस्ट्री व्यय (१०० प्रतियाँ विद्वानों की सेवा में एवं समाचार पत्रों में समालोचनार्थ)	५६।)
	४४२।)
व्याज (साहूकारा) १ वर्ष का	३३)
१८०० पुस्तकों का मूल्य (२०० पुस्तकें भेट स्वरूप वितरण)	४७५।)
एक प्रति का मूल्य	।)।
कमीशन पुस्तक विक्रेता	–)
मूल्य—	।–)

मुद्रक -
प्रताप प्रेस,
स्वामीघाट, मथुरा।

ओम्

पूर्व-जन्म-स्मृति

★ एक आध्यात्मिक विवेचन ★

लेखक—

'भारत में मूर्त्ति पूजा' तथा 'भारतीय संस्कृति के
तीन प्रतीक' आदि अनेक उपयोगी पुस्तकों
के यशस्वी प्रणेता—विद्वद्वर
श्री पं० राजेन्द्रजी ।
(अतरौली)

★

प्रकाशक—

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार
कृष्णगङ्गा, मथुरा ।

प्रथमवार २०००

मूल्य ।=) छः आना

प्रस्तावना

इस पुस्तक में पूर्वजन्म-स्मृति की घटनाओं के आधार पर पुनर्जन्म, आत्मा, परमात्मा तथा कर्म–फलादि विषयों का आध्यात्मिक विवेचन किया गया है। पुनर्जन्म आर्य्य संस्कृति का एक मौलिक सिद्धान्त है। भारतीय तत्ववेत्ता ऋषियों एवं दार्शनिकों ने इस सिद्धान्त का आर्य धर्म शास्त्रों में सर्वत्र निरूपण किया है। एक समय था जब सभी जातियाँ इस सिद्धान्त में किसी न किसी रूप में विश्वास करती थीं, संसार के धार्मिक इतिहास में इसके पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं। आज भी यहूदी, मुसलमान और ईसाइयों के अतिरिक्त सब ही सम्प्रदाय इस सिद्धान्त में थोड़े बहुत मतभेद के साथ आस्था रखते हैं! योरुप और अमेरिका के कुछ कट्टर ईसाइयों के अतिरिक्त बुद्धिवादी ईसाई भी अब इसको मानते जा रहे हैं। सत्य तो यह है कि पूर्वजन्म-स्मृति की प्रत्यक्ष घटनाओं की उपस्थिति में आवागमन में सन्देह करना आत्म–प्रवंचना ही है।

पुनर्जन्म का विषय आध्यात्मिक होने के साथ मनोरंजक भी है। पूर्वजन्मस्मृति की घटनाओं ने जिनका कि इस पुस्तक के आरम्भ में संग्रह किया है इस विषय को और भी मनोरंजक बना दिया है। यह घटनाएं, यदि हम उन पर गहराई से विचार करें तो मनुष्य जीवन की अनेक पहेलियों का जिन्हें प्राय: लोग अज्ञात विषय कह कर टाल दिया करते हैं, सुन्दर समाधान प्रस्तुत करतीं हैं। जैसे जैसे हमने इन घटनाओं का अनुसन्धान किया, हमें आश्चर्य होने लगा कि ऐसे प्रत्यक्ष प्रमाणों की विद्यमानता में भी लोग अनात्म, अनीश्वर एवं अज्ञेयवादी कैसे बने रहते हैं।

आज के भौतिक युग में जब मनुष्य की सङ्कुचित दृष्टि रोटी, कपड़ा और मकान से आगे नहीं जाती, इस बिषय का विवेचन विशेष महत्व रखता है। भारतवर्ष सदा से अपने अध्यात्मवाद के कारण संसार में एक विशेष स्थान रखता रहा है। आज भी यदि संसार

इसकी प्रतिष्ठा है तो उसके मूल में भी उसकी यही विशेषता काम कर रही है। परन्तु दुर्भाग्यवश पश्चिमी भौतिकवाद के माया जाल ने इसके निवासियों को भी कुछ समय से विमोहित सा कर लिया है और उनकी बुद्धि भी रोटी—कपड़ा और मकान को सर्वस्व समझ कर आगे नहीं जाती। परन्तु क्या मनुष्य जीवन का यही लक्ष्य है ? इसकी पूर्ति तो एक छोटा कीड़ा भी कर लेता है। तब क्या हमारे जीवन का एक कीड़ा जितना ही मूल्य है ?

विज्ञान के आविष्कारों ने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य के पास वह बुद्धि है जो अणुतत्व द्वारा–भू-निर्माण न सही—उसके एक बड़े भाग को ध्वस्त करने की क्षमता रखता है, ईश्वर तक न सही चन्द्र लोक की उड़ान भरने के स्वप्न वह देख सकता है। हमारा विश्वास है कि यदि विज्ञान, विध्वंसक मार्ग को न अपना कर, निर्माण की ओर अग्रसर रहा तो एक दिन वह आयेगा कि उसके आविष्कार आत्मा एवं ईश्वर-अस्तित्व सिद्ध करने के साधन बन जायेंगे। आज का वैज्ञानिक अपने से पूर्व वैज्ञानिकों की भांति अनीश्वरवादी नहीं रहा। वह या तो अब पूर्ण आस्तिक है अथवा सन्देहवादी मात्र है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में ऐसे अवसर आते हैं जब कुछ घटनाएं उसे भौतिकवाद से ऊपर उठने और आध्यात्मिक प्रश्नों पर सोचने के लिये विवश करती हैं। बहुत लोग ऐसे अवसरों से लाभ उठाते हैं और अपनी भूलों को सुधार लेते हैं। कुछ ऐसे भी होते हैं कि दूसरे ही क्षण उनकी ओर से आँखें बन्दकर लेते हैं। किन्तु एक अवसर, और जीवन का अन्तिम अवसर, ऐसा भी आता है जब प्रत्येक मनुष्य को इन प्रश्नों के महत्व का मूल्याङ्कन करना पड़ता है और उसे अपनी भूलों पर पश्चाताप होता है। परन्तु अब उसे इनके सुधारने का अवसर कहाँ ? मृत्यु का पंजा अब इन पर सोचने समझने का अवकाश नहीं देता। और वह एक दैवीशक्ति, जो उसके अधिकार और शक्ति से ऊपर है, के आधीन खिंचा चला जाता है।

पूर्व जन्म स्मृति घटनाओं के जानने और उनके सम्बन्ध में अन्वेषण करने की अभिरुचि मुझे सदा से ही रही है। इनकी सत्यता ने मेरे आध्यात्मिक विचारों को दृढ़ से दृढ़तर बनाने में बड़ी सहायता की है : मेरे लिये अब आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व में सन्देह करने जैसी कोई वस्तु नहीं है। पुनर्जन्म में पूर्णास्था के कारण मृत्यु भी मेरे लिये अब भयावह नहीं रही। संक्षेपतः इन घटनाओं का मेरे जीवन और धार्मिक विश्वासों के लिए बड़ा मूल्य है। अतएव जिन तथ्यों पर अनुसन्धान द्वारा मैं स्वयं पहुँचा हूँ उनसे अन्यों को अवगत करने और जो मुझसे सहमत हों, उनको इसे आगे विकसित करने के लिए प्रेरित करना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है।

अन्त में मैं उन विद्वानों का जिनकी रचनाओं और विचारों से इस पुस्तक को लिखने में मैंने सहातया ली है, आभार प्रदर्शित करता हूँ।

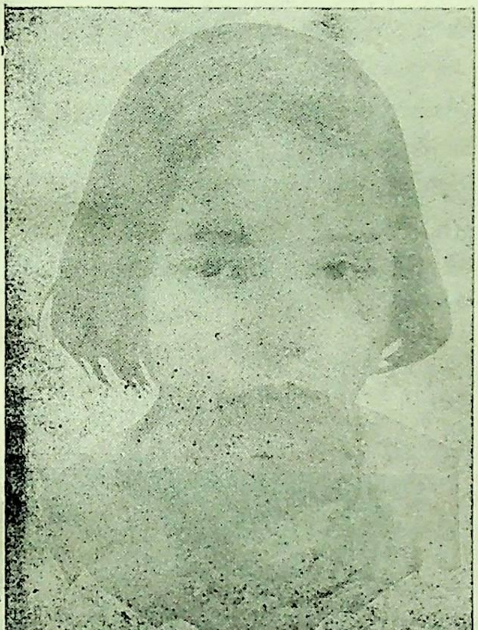
ज्ञातव्य—पुस्तक प्रकाशन में प्रेस की कुछ अशुद्धियां रह गई हैं; पाठक शुद्धि पत्र देख कर उन्हें ठीक करलें।

आर्य्यनिवास
अतरौली (अलीगढ़)
भाद्रपद पूर्णिमा सं० २०१२ वि०

राजेन्द्र

पुस्तकों की सूची जिनसे लेखक ने सहायता ली है :

१—पुनर्जन्म-मीमांसा — प्रो० नंदलाल खन्ना एम० ए०
२—आत्म-दर्शन — महात्मा नारायण स्वामी
३—कर्म-रहस्य — ” ” ”
४—मृत्यु और परलोक — ” ” ”
५—जीवात्मा — श्री प० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम. ए.
६—आस्तिकवाद — ” ” ” ” ”
७—अद्वैतवाद — ” ” ” ” ”
८—कर्म-व्यवस्था — श्री पूर्णचन्द्र एडवोकेट
९—धर्म और उसकी आवश्यकता — श्री ला० ज्ञानचन्द्र आर्य्य
१०—सुबूत तनासुख — श्री प० लेखराम



घटना सं० २१ कुमारी शान्तिदेवी, दिल्ली।



घटना सं० १
झांसी के निकटवर्ती गांव का जन्मांध बालक।



घटना सं० १८
दामोदर प्रसाद
ग्राम—काला देही (जबलपुर)

विषय-सूची

☆

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	९	गली	भली
११	२३	डफरिनविज	डफरिन ब्रिज
१५	१७	गिरा	मरा
१६	१३	केलोडर	केलीडर
१६	१६	चोबेजी	चौबे जो
१६	२०	रामायण और	रामायण,
२०	५	उसने उल्लेख किया था	ऊपर उल्लेख कियागयाहै
२४	१७	१९३५	१९२५
२८	७	(के पश्चात घटनाओं का ३ खण्ड प्रारम्भ होताहै)	
४५	१०	साधु	एक साधु
४६	१२	समझी	समझती
४९	४	निवासी	प्रत्येक निवासी
५१	७	एक	एक स्वतंत्र मनुष्य
५३	३	अन्य	अन्त
५४	९	होतीं	होतीं;
५७	२	अन्य	एक अन्य
५८	२३	क्यों	क्यों ?
५९	८-९	नाम नाम	नाम
५९	६	चेतन	मन
५९	२०	उससे	इससे
६२	११	डरा व्रिज	डरा ब्रिज
६३	पादटिप्पणी ३	ज्ञानानन्द्र	ज्ञान चन्द्र
६३	,,	,, दसरी	दूसरी
६६	१७	८१०	८-१०
७६०		जसाक	जैसाकि

पहला अध्याय

❀ पूर्व जन्म स्मृति ❀

★

: १ :

पुनर्जन्म अथवा आवागमन का सिद्धान्त भारतीय दर्शन की एक विशेषता है जो संसार के समक्ष वैदिक धर्म का बौद्धिक तथा वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करता है। पूर्व जन्म स्मृति, जिसकी घटनाएं समस्त संसार में प्रायः नित्य घटती रहती हैं, इसका एक ज्वलंत एवं प्रत्यक्ष प्रमाण है, जिन्हें देखकर न केवल आजका दार्शनिक अपितु आत्मवाद का उपहास करने वाला भौतिक शास्त्री भी बरबश इसकी सत्यता स्वीकार कर रहा है। फलतः योरुप और अमेरिका के बहुत से विद्वानों ने इसकी प्रामाणिकता को अंगीकार करते हुए, इस विषय पर अनेक ग्रन्थ लिखे हैं।

भारत में पूर्व जन्म स्मृति के समाचार प्रायः पत्र-पत्रिकाओं द्वारा प्रकाश में आते रहते हैं, जो अनुसंधान करने पर सत्य सिद्ध होते हैं। बहुत से लोग इन घटनाओं को अनेक कारणों से छिपाते हैं। कुछ का विश्वास है जिन बालकों को यह स्मृतियां रहती हैं वे अधिक जीवित नहीं रहते, यद्यपि अनुसंधान से यह एक अंध-विश्वास ही प्रमाणित होता रहा है। ऐसे बालक केवल हिन्दुओं में ही उत्पन्न होते हों, ऐसी बात भी नहीं है। वे मुसलमान, ईसाई तथा अन्य मतावलम्बियों के यहाँ भी जन्म लेते हैं, परन्तु जो लोग इस सिद्धान्त को अपने विश्वासों के प्रतिकूल मानते हैं, वे प्रायः उन्हें

छिपाते रहते हैं। फिर भी उनके यहां की कुछ घटनाएं प्रकाश में आही जाती हैं। योरुप तथा अमेरिका में बुद्धिवाद के विकास के साथ वहां के ईसाई मिश्नरी तक इस सिद्धान्त को मानने लगे हैं। अमेरिका के सौ ईसाई मिश्निरियों से यह प्रश्न पूछे जाने पर कि पुनर्जन्म होता है या नहीं, उत्तर प्रायः स्वीकारात्मक थे। कुछ ने अपनी अनिश्चितता प्रकट की और केवल दो, तीन ने उसे अस्वीकार किया।

पुनर्जन्म के सिद्धान्त को अंगीकार कर लेने पर आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी बहुत सी गुत्थियां सुलझ जाती हैं। इस सिद्धान्त द्वारा आत्मा, परमात्मा दोनों का अस्तित्व स्वतः सिद्ध हो जाता है, जिस पर कि इस पुस्तक में आगे विचार किया गया है। हिन्दुओं के जैन और बौद्ध, दो ऐसे भी सम्प्रदाय हैं जो आवागमन को मानते हुए भी इन दोनों चेतन सत्ताओं में विश्वास नहीं करते। इस पर भी हमने यथा स्थान विवेचन किया है।

यहां हम पहिले पूर्वजन्म-स्मृति की घटनाओं एवं तत्सम्बन्धी अनेक प्रश्नों पर विचार करेंगे। इसमें कुछ घटनाओं के सम्बन्ध में हमने स्वयं अनुसंधान किया है। कुछ का उल्लेख पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में हुआ है जिनकी सत्यता भी भली प्रकार प्रमाणित हो चुकी है। कुछ ऐसी भी हैं जिनको उत्तरदायित्वपूर्ण गण्यमान्य महानुभावों से, जिन्होंने उनकी स्वयं जाँच की है, सुना है। अतएव यह सभी विश्वसनीय तथा असंदिग्ध हैं। ऐसी समस्त घटनाओं का यदि यहां विस्तार पूर्वक उल्लेख किया जाय तो ग्रन्थ का आकार अनावश्यक रूप से बढ़ जाने का भय है अतः कुछ थोड़ी घटनाओं को ही संक्षेप में स्थान दिया गया है।

पहिले हम उन घटनाओं को लेंगे जिनका हमने स्वयं अनुसंधान किया है:—

१—झांसी (उत्तर प्रदेश) के निकटवर्ती एक ग्राम का ६ वर्षीय जन्मान्ध बालक (जिसका जन्म एक पिछड़ी हुई लोधी जाति में हुआ था) का परीक्षण न केवल हमने अपितु देहली की बहुत सी संस्थाओं ने किया। यह बालक अपने को पूर्वजन्म का नासिक का एक साधु बताता था। इसे समस्त गीता, तुलसीकृत रामायण के कई काण्ड तथा वेद का पुरुष सूक्त आदि कण्ठ थे और उनको धारा प्रवाह रूप में सुनाता था। साधु होकर जन्मान्ध होने का कारण पूछने पर केवल इतना सङ्केत करता था कि चढ़ते चढ़ते पैर फिसल गया और इस अधोगति में आ पड़ा। यह बालक जब स्त्रियों से बात चीत करता था तो इसकी भावभङ्गी कुछ विचित्र, रसिकों जैसी हो जाती थी। जिससे उसके पूर्व जन्म में दुश्चरित्र होना, जिसकी ओर यह उपर्युक्त संकेत करता था, प्रमाणित था।

२—एक बालक जिसका जन्म अतरौली (अलीगढ़) के निकटवर्ती ग्राम चंदोआ में हुआ था। और जिसकी अवस्था ३-४ वर्ष होगी, अपने को पास के ग्राम बड़ेसरा का एक जाट कृषक कहता था। साथ ले जाने पर स्वयं ही अपने पूर्व जन्म के घर पर पहुंच गया और उस जन्म की अपनी वृद्धा माता की गोद में जा बैठा। अपने एक बैल के सम्बन्ध में उसने पूछ ताछ की। इसे अपने गत जन्म के नाम धाम आदि का पूर्ण ज्ञान था।

३—मेरे अपने जमींदारी के ग्राम रायपुर दलपतपुर तहसील अतरौली (अलीगढ़) में एक बालक जिसकी अवस्था उस समय लगभग ६ वर्ष होती और जो एक मैथिल के यहां उत्पन्न हुआ था, अपने को पूर्व जन्म का जहांगीराबाद (बुलंदशहर)

निवासी एक जाट बताता था। उसने अपना, अपनी स्त्री और पुत्रों का नाम, मौहल्ला और घर का पता बताया। अनुसंधान करने पर वे सब सत्य सिद्ध हुए। इस बालक की पूर्व जन्म में मृत्यु हुए लगभग ६० वर्ष हो चुके थे। उसका घर उस समय एक मिट्टी का ढेर हो चुका था और उसके पुत्रों का भी कुछ पता नहीं चल सका कि कहां थे। हां, नामादि जो उसने बताये, वे पूर्णतः सत्य थे। इस साठ वर्ष के मध्य वह कहां और किस योनि में रहा, इसका इसे कोई ज्ञान नहीं था।

४—डिबाई (बुलंदशहर) निवासी अपने एक मित्र की कन्या जिसकी अवस्था उस समय ६, ७ वर्ष होगी, पूर्व जन्म में अपने चाचा की कन्या होना बताती थी। आगरा में अपनी सुसराल के लोगों के नाम और पूरा पता बताती थी। उसकी स्मृति, घर में रखे हुए अपने कुछ वस्त्रादि को देख कर जाग्रत होगई थी। इसकी मृत्यु और पुनर्जन्म में लगभग दो मास का अन्तर था, इससे जीव गर्भ में किस समय प्रवेश करता है, यह एक विवाद का विषय प्रस्तुत होता है। शरीर शास्त्रियों और दार्शनिकों का मत है कि जीव गर्भाधान के समय ही गर्भ में प्रवेश करता है। इसका समाधान जो हमारे विचार में आया है एक अन्य घटना के साथ (जो रूस और उत्तरी अमेरिका के दो स्थानों में एक साथ घटी), प्रस्तुत किया जायगा।

५—अतरौली (अलीगढ़) इन्टर कालिज में श्री हरस्वरूपजी एम० ए०, एल० टी, एक अध्यापक थे। उन्हें अपने बाल्यकाल में पूर्वजन्म की स्मृति हो गई थी उनका जन्म दातागंज, जिला बदायूं (उ० प्र०) में हुआ था। पूर्व जन्म में भी वह इसी नगर के निवासी थे। जब उनकी पिछले जन्म की पत्नी को इसका पता

लगा तो वह उनके यहाँ आई। खुला मुंह होने पर उन्होंने उसके एक चपत लगाई और कहा कि सबके सम्मुख मुंह खोलकर आती है। उसके पूछने पर उन्होंने कुछ रुपया जो मिल नहीं रहा था अपनी बैठक में स्थान बता कर खोद कर निकलवाया। गत जन्म में वह कानूनगो थे और उन्हें किसी ने एक नहर की पटरी पर आते हुए वध कर दिया था। इस घटना की उन्हें स्मृति थी किन्तु किसने बध किया, इसका ज्ञान नहीं था।

६—श्री सूरजस्वरूप, स्टोरकीपर, जल-विद्युत विभाग, अतरौली (अलीगढ़) मुरादाबाद निवासी ने बताया कि उनका जन्म सन् १९२९ ई० में हुआ था। जब इनकी अवस्था २-३ वर्ष थी, इन्हें पूर्व-जन्म स्मृति होगई। उन दिनों इनके पिता श्री गिरिराज किशोर, लकसर रेलवे स्टेशन पर गुड्स क्लर्क थे। यह गत जन्म में दहली के मौहल्ला दरीबा कलाॅ के सेठ हरीशंकर के पुत्र थे। इनका एक और भाई (सम्भवतः छोटा) था। यह सराफे की दुकान पर बैठते थे और इनका भाई हलवाई की दुकान पर जो दोनों दरीबाकलाॅ में ही थीं। इनका भाई सराफे की दुकान पर बैठना चाहता था और यह उसके लिये उद्यत नहीं थे। इस विवाद में इनके भाई ने इनके एक दिन फरसा मारा जिससे इनकी मृत्यु अस्पताल में होगई। इस स्मृति घटना की जांच इनके वर्तमान पिता ने उस समय की थी और सत्य पाया। सेठ हरीशंकर भी इनको देखने लकसर आये बताये जाते हैं किन्तु इन्हें उनसे नहीं मिलने दिया गया।

सन् १९४८ ई० में यह स्वयं अपने एक सहपाठी के साथ दहली गये और सीधे बिना पूर्व परिचय अपने मकान पर पहुंच गये, दुकानें भी देखीं जो अब किन्हीं पंजाबी शरणार्थी के पास हैं।

एक वृद्ध ने बताया कि उनका भाई मकान बेच कर बम्बई चला गया और उसका अब उसे कोई पता नहीं है। मृत्यु के समय इनकी अवस्था लगभग २३-२४ वर्ष की थी और इनकी पत्नी और दो पुत्र थे। उनका भी कोई पता नहीं चला। इनका कहना है कि कदाचित् इनको गत तीसरे जन्म का भी कुछ आभास था जिसमें कि यह एक साधु थे।

: २ :

अब मैं उन स्मृतियों का वर्णन करूंगा जिनका उल्लेख पुस्तकों, समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में समय समय पर होता रहा है। इनमें कुछ का तो मेरे पास लिखित संग्रह है और कुछ ऐसी हैं जिनकी मुझे स्पष्ट स्मृति है, किन्तु दुर्भाग्यवश मैंने उनका कोई लिखित संग्रह नहीं रखा। मुझे कभी यह विचार नहीं हुआ कि इस विषय पर मैं कभी कुछ लिखने बैठूंगा। हाँ, इस सम्बन्ध में सदा से अभिरुचि होने के कारण वे घटनायें मेरे स्मृति-पटल पर आज भी स्पष्ट अंकित हैं।

७—पंजाब के लारेन्स गज़ट तथा पंजाबी अखबार दिनांक २६ अप्रैल सन् १८६६ ई० में ग्राम मोई जिला बरेली की एक घटना प्रकाशित हुई थी। वहाँ का प्यारेलाल सन् १८५७ ई० में मारा गया। उसने तोता की योनि में जन्म लिया। वह नित्य सायं अपने घरके एक पिंजड़े में आ जाता और प्रातः उड़ जाता। एक दिन जाकर वह पुनः न लौटा, इसके घर के लोगों को बड़ा पश्चाताप रहा। एक दिन निकट के एक ग्राम के गुसांई की पत्नी कार्यवश किसी दूसरे ग्राम को गई। मार्ग में पानी पीने को वह अपने किसी परिचित के यहाँ मोई में पहुंची। उसके पांच वर्ष के पुत्र ने जो उसके साथ था, अपने पूर्वजन्म के घर और वंशजों

को पहिचान लिया और कहा कि मेरा नाम प्यारेलाल है। इस बालक ने परिवार के सब लोगों का हाल पूछा। घर में खड़े नीम के वृक्ष के सम्बन्ध में भी पूछताछ की, जो कट चुका था। उसने अपने गदर में मारे जाने और तोता बनने तथा चिड़ीमार द्वारा मारे जाने का वर्णन किया। अपने पूर्व जन्म के माता, पिता, नानी तथा चाची को पहचान कर उनसे अपनी टोपी और पुस्तकें मांगीं।

इस घटना में बालक को अपने दो पहले जन्मों की स्मृति रही और वह कुछ समय पक्षी-योनि में रहा।

८—'आर्य दर्पण' वर्ष ४, अंक २०, अप्रैल सन् १८८१ ई० में निम्न घटना प्रकाशित हुई:—

संवत् १९३३ विक्रमी में ग्राम कन्धा (ग्वालियर) में मोहनलाल ठाकुर बन्दूक से मारा गया और उसी वर्ष ग्राम गरीब का पुरा, में जो कन्धा से ६ कोस है, काशीराम के यहाँ एक पुत्र उत्पन्न हुआ। तीन वर्ष की अवस्था में एक दिन बंदूक का शब्द सुनकर रोने लगा और बहुत भयभीत हुआ। कारण पूछने पर बताया कि मैं मोहन कन्धा वाला हूं। मुझको हरवल्लभ ने बन्दूक से मारा था। जब यह सूचना जिला अधिकारी तक पहुंचा तो उसके बयान लिये गये। उसने हरवल्लभ को पहचान लिया और जब वह अभियोग फर्वरी सन् १८८१ ई० में ग्वालियर में हुआ तो यहां भी उसने यही बयान दिये। मोहन के भाई को देख कर उसने कहा—कि यह मेरा भाई है। और बताया कि मैं सब कुछ पहिचानता हूं।

९—फिलोसफीकल इन्क्वाइरीज़, ने सेन्टपीटर्स वर्ग वीकली मैडीकल जनरल से एक घटना उद्धृत की है जिसे आर्य्य

मैगज़ीन अक्टूबर सन् १८८४ ने प्रकाशित किया था। घटना बड़ी विचित्र है जो आवागमन के एक नवीन प्रकार पर प्रकाश डालती है। औरनबर्ग पूरवी रूस का एक नगर है जो यूराल पर्वत पर स्थित है। लगभग एक वर्ष हुआ इस नगर का इब्राहीम चारको, एक धनाढ्य यहूदी, प्रबल ज्वर से पीड़ित हुआ और २२ सितम्बर सन् १८७४ की अर्द्ध रात्रि को वह अत्यन्त असह्य मानसिक कष्ट के कारण उद्विग्न हो उठा। वैद्यों ने उसे सन्निपात की अवस्था बताया। कुछ यहूदी बुलाये गये, प्रार्थनायें की गईं, बत्तियां जलाई गईं। यह रोगी जो पहले मरणासन्न था भली प्रकार श्वास लेने लगा। आंखें खोलीं, इधर उधर आश्चर्य से देखा और सो गया।

प्रातः उठने पर उसके घर वालों ने उससे प्रेमालाप करना चाहा परन्तु उसने सबको हटा दिया। वह ऐसी भाषा में बातें करने लगा जिसे कोई नहीं समझता था। उसकी मातृ भाषा इब्रानी थी और उसे रूसी भाषा का भी थोड़ा ज्ञान था। डाक्टर को बुलाया गया जिसने उसके पागल हो जाने का निदान किया। फलतः घर वाले तथा सम्बन्धी बहुत दिनों तक निराश अवस्था में रहे। वह दर्पण में अपनी आकृति देख कर हँसता और आश्चर्य में डूब जाता। घर से बाहर भागने का भी प्रयत्न करता, परन्तु घर वाले द्वार बन्द कर देते थे। सरकारी डाक्टर तथा अन्य डाक्टरों को बुलाया गया जो परीक्षण के पश्चात् इस परिणाम पर पहुंचे कि यह एक नियमबद्ध भाषा बोलता है। उसे लिखने को कागज़ दिया गया जिस पर उसने सुन्दर लैटिन लिपि में कुछ लिख दिया। एक डाक्टर ने उसे पढ़ तो लिया परन्तु समझने में असमर्थ रहा। लोगों को आश्चर्य था कि यह लैटिन-लिपि का ज्ञान इसे किस प्रकार हुआ।

अन्त में उसे सेन्टपीटर्सबर्ग की मेडीकल यूनीवर्सिटी में ले जाया गया । प्रो० आरलो ने उसकी भाषा को सुना और पहिचान लिया कि यह अंग्रेजी है । इससे इब्राहीम को बड़ी प्रसन्नता हुई कि अन्त में उसे एक ऐसा व्यक्ति मिल गया जो उसकी भाषा समझता है। उसने प्रोफेसर को बताया कि मैं ब्रिटिश कोलम्बिया (उत्तरी अमेरिका) का रहने वाला हूँ । मैं न्यूवेस्टमिनिस्टर निवासी हूं । मेरी पत्नी और एक लड़का है। परन्तु यह भेद ईश्वर जानता है कि मैं किस प्रकार इस स्त्री के पास आ गया। प्रोफेसर ने इसे एक षडयन्त्र समझ कर राज्य को इसकी जांच करने को कहा परन्तु जांच का परिणाम भी उसके वर्तमान कुटुम्बियों के पक्ष में निकला। इब्राहीम ने कहा यद्यपि मेरा नाम इब्राहीम है किन्तु इब्राहीम चारको नहीं, इब्राहीम डरहम है। एक दिन रात्रि में वह अपने घर से भाग गया। बहुत ढूंढा गया, अन्त में यह अनुमान लगा लिया कि वह पागल होने के कारण निकट की नदी में डूब मरा।

सन् १८७५ ई० में प्रो० आरलो ने एक समाचार पत्र में पढ़ा कि न्यूवेस्टमिनिस्टर में एक ऐसी घटना हुई है जिसने समस्त ब्रिटिश कोलम्बिया को आश्चर्य में डाल दिया है । दिनांक २२ सितम्बर सन् १८७४ को यहां का एक व्यापारी अचानक रोग ग्रसित हुआ। उसके बचने की किसी को आशा नहीं रही किंतु अन्त में वह स्वस्थ हो गया। आश्चर्य की बात यह है कि वह एक ऐसी भाषा जिसे वहां के एक व्यक्ति ने यहूदियों की गंवारू भाषा बताया, बोलता है। रोग से पूर्व वह एक सुडौल व्यक्ति था किन्तु अब दुबला और कुबड़ा हो गया है । वह अपने घर के किसी व्यक्ति को नहीं पहिचानता और कहता है कि मेरे स्त्री बच्चे

अन्यत्र हैं। बहुत दिन पश्चात् एक यात्री आया जिसकी आकृति ठीक इब्रानियों जैसी थी। उसने कहा कि मैं इस स्त्री का पति हूं। वह ठीक उसके पति जैसी भाषा बोलता है, गुप्त भेद जो एक पति-पत्नी ही जानते हैं, प्रकट करता है। परन्तु उसे कोई पहिचानता नहीं है। स्त्री बड़े संकट में हैं कि वह इस यहूदी आकृति वाले को अपना पति कैसे माने ?

प्रो० आरलो ने स्वयं वहां जाकर देखा कि वास्तव में यह वही व्यक्ति है जिसे उसने कुछ समय पूर्व सेन्टपीटर्सबर्ग में देखा था। उसने दूसरे व्यक्ति से रूसी भाषा में बात चीत की जिसने अपने आपको औरनबर्ग निवासी बताया और कहा कि मेरा नाम इब्राहीम डरहम नही है अपितु इब्राहीम चारको है। यह ध्यान देने योग्य है कि दोनों व्यक्ति २२ सितम्बर सन् १८७४ को एक ही समय जीवन और मृत्यु की घड़ियां गिन रहे थे। इस प्रकार एक शरीर की आत्मा दूसरे शरीर में चली गई। यह दोनों नगर पृथ्वी के ठीक विपरीत भाग में स्थित हैं। यदि एक कील एक नगर में पृथ्वी के आर पार गाढ़ी जाय तो वह दूसरे नगर में जा निकलेगी।

(आश्चर्य मेगजीन अक्टूबर १८८४ ई०, अङ्क ८, वर्ष तीन, पृष्ठ १५९ से १६२)।

१०—कुंवर केकयीनन्दनसहाय, बी० ए० एल० एल० बी० वकील, बरेली निवासी का पुत्र जगदीशचन्द्र, जिसकी उम्र सन् १९२६ में साड़े तीन वर्ष थी, अपने को पूर्व जन्म का बनारस निवासी बबुआ जी पांडे का पुत्र बताने लगा। अपने निवास स्थान के बड़े द्वार, बैठक और तहखाना जिसमें एक लोहे की तिजोरी दीवार में लगी हुई थी, का वर्णन करने लगा। उसने

यह भी बताया कि बबुआ जी अपने शरीर पर मालिश कराते हैं और अपने चेहरे पर स्नान करने से पूर्व रज लगाते हैं। उसने अपने यहां दो मोटर कार, दो घोड़ों वाली एक फिटन बताई। उसने यह भी बताया कि बबुआ जी के दो लड़के और एक पत्नी थी जो सभी मर चुके हैं। बबुआ जी अकेले रहते हैं। उसने परिवार की बहुत सी गोपनीय बातें भी बताईं।

इस बालक से बरेली के बहुत से प्रतिष्ठित लोगों और अधिकारियों ने बात चीत की। अन्त में उसे बनारस ले जाया गया। जहां पर उसने बबुआ जी पांडे तथा दूसरे लोगों को भली प्रकार पहिचान लिया। घर के प्रत्येक स्थान को घूम कर बताया। इस बालक का पूर्व जन्म का नाम जयगोपाल था। जगदीशचन्द्र का जन्म ४ मार्च सन् १९२३ को हुआ था और जयगोपाल की मृत्यु अक्टूबर सन् १९२२ ई० में हुई। मृत्यु के समय उसकी अवस्था दस ग्यारह वर्ष की थी। इस बालक को दशाश्वमेध घाट पर ले जाया गया जिसे उसने दूर से ही पहिचान लिया। उसने वहां दो बार बड़ी प्रसन्नता से एक पंडा की गोद में गंगा स्नान किया जिसे उसने देखते ही पहिचान लिया था। वर्षा काल की गंगा के वेग से भी यह बालक भयभीत नहीं हुआ और एक सुपरिचित व्यक्ति की भांति उसमें स्नान किया। पंडे ने जब उसे पान खाने को दिया तो उसने यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि वह एक बड़ा पंडा है और छोटे पंडे के हाथ का पान नहीं ले सकता। इसने विश्वनाथ मन्दिर, हरिश्चन्द्र घाट और डफरिन ब्रिज को भी पहिचान लिया, इसे बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी भी ले जाया गया जिसे इसने विश्व विद्यालय कहा और बताया कि उस समय इसका निर्माण हो रहा था। यह

घटना ५ जुलाई सन् १९२६ के दैनिक लीडर (इलाहाबाद) में प्रकाशित हुई थी । जगदीशचन्द्र इस समय बरेली में एडवोकेट हैं और वहीं वकालत करते हैं।

११—दैनिक लीडर में १२ अगस्त सन् १९२६ को एक पूर्व जन्म स्मृति की अन्य घटना प्रकाशित हुई थी । विश्वनाथ जिसकी अवस्था साढ़े पांच वर्ष थी और जिसका जन्म बरेली के मोहल्ला खन्नू में ७ फर्वरी सन १९२१ को हुआ था, अपनी डेढ़ वर्ष की अवस्था से ही पीलीभीत के सम्बन्ध में पूछताछ करने लगा। यह पीलीभीत और बरेली के बीच का अन्तर जानने और अपने पिता से वहाँ चलने का आग्रह करने लगा । जब वह तीन वर्ष का हुआ तो उसने अपने सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन करना प्रारम्भ कर दिया । पहले तो उसके पिता ने इस घटना को छिपाने का प्रयत्न किया किन्तु अन्त में श्री केकयीनन्दनसहायजी के आग्रह पर उसे पीलीभीत ले गये। सर्व प्रथम उसे गवर्नमेंन्ट हाईस्कूल पीलीभीत ले जाया गया जिसे उसने नहीं पहिचाना किन्तु पीछे ज्ञात हुआ कि यह स्कूल का नया भवन है । पुराने भवन में ले जाये जाने पर बालक ने उसे तुरन्त पहिचान लिया। उसे चारों ओर घूम कर देखा और सीढ़ियों द्वारा ऊपर चढ़ कर सबसे ऊपर की छत से अपने पुराने मकान को जो वहां से दीख पड़ता था दिखाया। उसने अपनी छठी कक्षा के कमरे को भी ठीक ठीक बताया। जिसका उसके पुराने दो सहपाठियों ने समर्थन किया। उसने अपने अध्यापक का नाम भी बताया। जब उसे साहू श्यामसुन्दरलाल के फाटक पर ले गये तो वह तांगे से नीचे उतर पड़ा और उसे सुन्दरलाल का हरा फाटक बताया। उसने उस चौक को भी बताया जहां वेश्याओं का नृत्य हुआ करता था। उसे स्व० ला० देवीप्रसाद रईस के मकान पर ले जाया गया जिसे

उसने अपना घर बताया। उसने चिल्ला कर कहा कि यही हरनरायन का घर है। हरनरायन उसके पिता का नाम था जो ला० देवीप्रसाद के पुत्र थे। इस पुराने बड़े मकान का बहुत सा भाग गिर गया था तथा अन्य पर्याप्त परिवर्तन भी हो गये थे। उसने उन स्थानों को भी दिखाया जहां वह शराब पीता और वेश्याओं का नृत्य देखता था। उसे ला० हरनरायन और उनके पुत्र लक्ष्मीनरायन (जो इस बालक का पूर्व जन्म का नाम था) का एक अस्पष्ट फोटो दिखाया गया। उसने उंगली रखकर अपना तथा अपने पिता का चित्र भली भांति पहिचान लिया और कहा कि यह मैं हूं तथा ये हरनरायन जी हैं। इस बालक के सामने तबलों की एक जोड़ी रखी गई जिसे उसने बड़ी सरलता से बजाया था। यद्यपि इस जन्म में उसने तबला कभी नहीं देखा था। लोगों ने उस वेश्या का नाम जिससे उसका सम्बन्ध था बार बार पूछा अन्त में उसने लजाते हुए 'पद्मा' बताया जिसे उपस्थित लोगों ने ठीक बताया। इस बालक की मृत्यु शाहजहांपुर में १५ दिसम्बर सन् १९१८ को ६ बजे प्रातः ज्वर तथा फेफड़ों के रोग से ३२ वर्ष की अवस्था में हुई थी।

इस बालक की पूर्व जन्म की माता ने २५ अगस्त सन् १९२६ को बरेली में निम्न प्रश्न किये जिन्हें उत्तर सहित उद्धृत किया जाता है।

प्रश्न—क्या तुम पतङ्ग उड़ाते थे ?

उत्तर—हां।

प्रश्न—तुम किसके साथ पेच लड़ाया करते थे ?

उत्तर—जो भी पतङ्ग मेरी पतङ्ग के सामने आती थी

मैं उसीसे पेच लड़ाया करता था । विशेषतया सुन्दरलाल के साथ ।

प्रश्न—क्या तुमने अचार फेंका था ?

उत्तर—मैंने अचार नहीं अपितु कीड़े फेंके थे। मैं कीड़े कैसे खा सकता था। तुम मुझे कीड़े खिलाना चाहतीं थीं इस लिए मैंने अचार फेंक दिया।

उसकी माँ ने बताया कि एक बार अचार सड़ गया था और उसमें कीड़े पड़ गये थे। मैंने कीड़ों को निकाल कर फेंक दिया और अचार धूप में रख दिया जिसे इसने फेंक दिया था। मास्टर सीताराम ने, जो उस समय गवर्नमेन्ट स्कूल बरेली में अध्यापक थे और जिन्होंने इस बालक को पीलीभीत में पढ़ाया था, जब यह पूछा कि तुमको मैं कौनसा विषय पढ़ाता था तो उसने तुरंत उत्तर दिया कि आप हिंदी पढ़ाते थे।

१२—हीराकौर पुत्री श्री श्यामसुंदरलाल, स्टेशन मास्टर, हल्द्वानी आर० के० रेलवे का जन्म सितम्बर सन् १९१९ में हुआ। यह कन्या अपने माता पिता के साथ अगस्त सन् १९२२ में मथुरा तीर्थ यात्रा पर गई। ये लोग नौका द्वारा मथुरा से गोकुल गये। वहाँ उस स्थान के निकट जिसे यशोदा और नन्द का निवास स्थल बताया जाता है, यह कन्या बल पूर्वक अपने पहाड़ी सेवक की गोद से नीचे उतर पड़ी। इस ऐतिहासिक स्थान के निकट ही एक छोटा सा मकान था। जिसके द्वार पर एक वृद्धा बैठी हुई थी। यह कन्या उस घर में घुस गई और उसकी माता भी उसके पीछे पीछे गई। यहाँ पहुंचने पर उसने एक बालक की भांति बोलना प्रारम्भ कर दिया। सर्व प्रथम उसने अपनी पट्टी और लेखनी जिसे उसने एक तिखाल में छोड़ा था, के सम्बन्ध में पूछा कि वे

कहां हैं ? पुनः उसने उस चौकी के विषय में प्रश्न किया जिस पर बैठ कर वह लिखती थी। इन प्रश्नों को सुनकर वह वृद्धा रोने लगी। इस कन्या ने उस वृद्धा से अपनी माता को पान देने और अपने पीतल के सरौते से सुपारी काटने को कहा। वृद्धा पीतल का सरौता निकाल लाई। कन्या ने अपनी माता से कहा– कि वह अब अपने घर आ गयी है, अब तुम जाओ परन्तु जाने से पूर्व पान खाती जाओ। हीराकौर की मां के आदेश पर सेवक उसे बलपूर्वक घर से बाहर ले आया। ये लोग यमुना के तट पर पहुँचे और कछुओं को चने तथा मुरवे डाले। कछुओं को देखकर हीराकौर ने कहा कि मुझे तुमने पहले डुबाया था अब फिर डुबाने आ गये। यह सुन कर वह वृद्धा फिर रोने लगी। कन्या ने वह स्थान भी दिखाया जहां डूबकर वह मरी थी। उस वृद्धाने बताया कि चार वर्ष पूर्व उसका बारह वर्ष का पुत्र यहीं डूबकर गिरा था।

१३—श्री पुत्तूलाल, कम्पाउन्डर, कमालपुर जि० सीतापुर के एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम सुंदरलाल रखा गया। जब यह बालक ढाई वर्ष का था उसने भली प्रकार बोलना प्रारम्भ कर दिया और अपने को सुन्दरलाल के स्थान पर हन्नेलाल कहने का आग्रह करने लगा। उसने बताया कि वह मोहल्ला कटरा फूटा फैजाबाद का रहने वाला है। उसकी जाति लाला है। उसकी एक पत्नी और दो पुत्र हैं। यह प्रश्न करने पर कि वह यहाँ कैसे आ गया। वह कहता कि जब उसका शव सरयू में फेंक दिया गया तो वह अपनी वर्तमान माता के साथ यहां चला आया। वास्तव में इसकी माता उसके उत्पन्न होने से ६ मास पूर्व सरयू स्नान के लिये अयोध्या गई थी। अनुसंधान करने पर कटरा फूटा, अयोध्या का ही एक मोहल्ला निकला। वहां के लोगों ने बताया कि

पं० इन्द्र विद्या वाचस्पति प्रदत्त संग्रह

हन्नेलाल कायस्थ थे जो विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे। प्लेग से उनकी मृत्यु हुई थी। रुग्णावस्था में उनकी पत्नी और पुत्र उन्हें छोड़ कर चले गये थे। पड़ौसियों ने उनके शवको ले जाकर सरयू में वहा दिया था। हन्नेलाल की मृत्यु ४५ वर्ष की अवस्था में हुई थी। कमालपुर का रेलवे स्टेशन अस्पताल के निकट ही था जहां इस वालक के पिता रहते थे। प्रायः लोग इस वालक को स्टेशन की ओर जाते हुए पकड़ कर लाते थे। वह फैजावाद रेल द्वारा अपने घर जाने का आग्रह किया करता था।

१४—पण्डित भिखारीलाल, परगना महोली तहसील मिश्रक जिला सीतापुर के एक पुत्री चमेला थी। वीस वर्ष की अवस्था होने पर जब उसके लिये कोई योग्य वर न मिला तो भिखारीलाल ने उसका सम्बन्ध एक ११ वर्ष के वालक के साथ निश्चित कर दिया। योग्य वरों के अभिभावक वहुत धन मांगते थे जिसे वह देने में असमर्थ था हताश उसे इस निर्धन वालक के साथ उसका सम्बन्ध निश्चित करना पड़ा। चमेला ने जब यह सुना तो सब घर वालों को भोजनादि खिला कर रात्रि में निकट के तालाब में जा डूबी। प्रातः उसका शव निकाला गया और पुलिस द्वारा पंचायत नामा लिखे जाने के पश्चात् उसकी अन्त्येष्टि कर दी गई। भिखारीलाल के मकान के निकट एक कामताप्रसाद वैश्य रहता था जो अध्यापक था। उसकी पुत्री चम्पा जब पांच वर्ष की हुई तो वह कहने लगी कि वह भिखारीलाल की पुत्री है और तालाब में डूब कर उसने अपने जीवन का अन्त किया था। भिखारीलाल के घर जाकर उसने अपनी चारपाई, लकड़ी का सन्दूक और रहने के कोठे को ठीक ठीक वताया और कहा कि अब उसके कपड़े इस सन्दूक में नहीं हैं।

इसकी आकृति और रूप रंग ठीक चमेला जैसा ही था। वह अब भी अपना विवाह नहीं करना चाहती थी और डूब कर मरने की भावना उसमें इस समय भी थी। वह कहती थी कि यद्यपि वह वैश्य के घर उत्पन्न हुई है परन्तु पात्रों में छोड़ा हुआ झूठा भोजन किसी का नहीं करती।

१५—श्री केकईनन्दनसहाय ने अपने चचेरे भाई श्री नन्दनसहाय बी० ए० के सम्बन्ध में एक अन्य कौतूहल पूर्ण घटना का वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि नन्दन सहाय की सन् १९०६ में विशूचिका से १९ वर्ष की अवस्था में मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय उनकी पत्नी को २ मास का गर्भ था। उनकी पत्नी को बड़े भयानक स्वप्न आते थे। एक रात उसने स्वप्न में अपने मृत पति को देखा जिसने कहा कि वह उसके गर्भ से उत्पन्न होगा। और क्यों कि वह उसका दूध नहीं पियेगा अतएव एक धाय उसके जन्म के समय तयार रखी जाय अन्यथा भूख से वह मर जायेगा। उसने यह भी कहा कि मेरे सिर पर एक चोट का चिन्ह होगा। पुत्रोत्पत्ति पर बालक के शिर पर वह चिन्ह था और वह अपनी मां का दूध नहीं पीता था। दूध निकाल कर चम्मच से भी मुख में डाला गया किन्तु उसने उसे उगल दिया।

वह अन्य सभी स्त्रियों का स्तन दबाता था और पीता था किन्तु अपनी माता का नहीं। युवा होने पर इस बालक का रूप रङ्ग और आकृति ठीक अपने पिता जैसी थी और उसके चित्र से मिलती थी। उसके बालों की मांग भी ठीक अपने पिता जैसी ही थी। ५ वर्ष का होने पर उसने अपनी माता से एकान्त में कहा कि वह उसका पति है। इस घटना की साक्षी अनेक प्रतिष्ठित नागरिकों और अधिकारियों द्वारा की गई है।

१६—बजरंगबहादुर पुत्र श्री रामचरनलाल दस्तावेज लेखक, मोहल्ला सैदपुरिया, बरेली का जन्म सन् १६१८ ई० में हुआ। उसके माता पिता दोनों ही साँवले रंग के थे परन्तु इस बालक का रंग अति गौर था। उसके बाल भूरे और आँखें अँग्रेजों जैसी कंजी थीं। उसके दो बन्दूक की गोली जैसे चिन्ह थे, एक शिर पर दूसरा गर्दन पर। वह चार वर्ष की अवस्था तक छुरी कांटे से खाना खाता रहा। विदेशी खेल खेलता था और फौजी सिपाही जैसी चाल चलता था। वह कहता था कि उसका नाम आर्थर है और वह एक अंग्रेज सिपाही है। २८ वर्ष की अवस्था में जर्मनी के युद्ध में उसकी मृत्यु हुई थी।

रामचरनलाल का दूसरा पुत्र भी इसी रूप रंग का था और बजरंगबहादुर उसे अपना दूसरा भाई बताता था। वह यह भी कहता था कि उसके दो भाई और माता हैं किन्तु पिता मर चुका है। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि रामचरनलाल और उसकी पत्नी दोनों ही पुराने विचारों के व्यक्ति थे और अंग्रेजी पढ़े लिखे नहीं थे। इस बालक को कुछ समय पहले अपने पूर्व जन्म की और भी स्मृतियाँ थीं परन्तु उसके माता-पिता इस घटना को छिपाते रहे। यह घटना कितनी रोचक थी किन्तु दुर्भाग्यवश अन्ध-विश्वास के कारण उस पर पटाक्षेप कर दिया गया।

१७—विलियम वाकर ऐटकेन्सन अपनी पुस्तक 'रीइन्कार्नेशन' में एक घटना का वर्णन करते हुये लिखते हैं कि एक निर्धन हिन्दू एक गांव में रह कर श्रम किया करता था, कभी गांव से बाहर नहीं गया था। एक दिन वह अचानक चिल्ला उठा कि मुझे याद आ गया कि मैं पहले अमुक गांव में रहता था। यह दूसरा गांव कई सौ मील दूर था। कुछ अमीर लोगों

को दिलचस्पी पैदा हुई, उन्होंने उसकी बात को लिख लिया और उसे उसके बताये हुये गांव में ले गये। वहाँ पहुंच कर वह हैरान होकर चिल्ला उठा कि सब कुछ बदल गया है। थोड़ी देर बाद वह कुछ कुछ पहिचानने लगा, उसने वहां के स्थानों के पुराने नाम भी बताये. एक टूटे फूटे निर्जन घर के सामने जाकर रोते हुये कहने लगा कि यह मेरा घर है।

उसने अपने पूर्व जन्म का नाम भी बताया। गांव के बूढ़े आदमियों से पूछने पर मालूम हुआ कि जब वे बच्चे थे तो उसी घर में उसी नाम का एक मनुष्य रहता था। अन्य स्थानों के पुराने नाम जो उसने बताये सब ठीक थे। उसने बताया कि अमुक स्थान पर मैंने एक मिट्टी के बर्तन में डाल कर कुछ रुपये ज़मीन में दबाये थे। खोदने पर रुपये वहीं पाये गये।

१८—दिनांक १६ सितम्बर सन् ५२ केलोडर (इलाहाबाद) में निम्न घटना प्रकाशित हुई है:—

जबलपुर से १८ मील दूर ग्राम कालादेही के एक शिव मन्दिर के पुजारी श्री कन्हैयालाल चौबेजी आबकारी विभाग में चपरासी थे, उनका छः वर्ष का बालक दामोदरप्रसाद है। यह बालक अक्टूबर सन् १६४६ में उत्पन्न हुआ था। वह बाल्मीकि रामायण तुलसीकृत रामायण, गीता, भोजप्रबन्ध, भर्तृहरि शतक, व्यास स्मृति महाभारत, अग्नि पुराण, अध्यात्म रामायण और शिव पुराण और ऋगवेद के किसी भी स्थल का स्वतः उच्चारण करने लगता है और उनका हिन्दी अनुवाद भी कर सकता है।

इस बालक को जब स्थानीय गांव की पाठशाला में गत नवम्बर मास में भर्ती किया गया तो उसकी संस्कृत और हिन्दी साहित्य की अपूर्व योग्यता ने वहां के अध्यापकों को आश्चर्य चकित कर दिया।

इस बालक से यह प्रश्न पूछा कि उसे यह योग्यता कैसे प्राप्त हुई, उसके पास इसका कोई उत्तर नहीं है। इस बालक के सम्बन्ध में एक विशेष बात यह है कि वह हिन्दी में ठीक ठीक साधारण वाक्य लिखने की भी योग्यता नहीं रखता परन्तु जब उससे उन स्थलों को जिनका कि उसने उल्लेख किया था, लिखनेको कहा गया तो उसने उन्हें बालकों जैसी लिपि में शुद्ध रूप से लिख दिया। वह आगे पढ़ने का बड़ा इच्छुक है। वह स्थानीय संस्कृत पाठशाला में सप्ताह में दो बार पाठ पढ़ने जाता है। यह बालक हरद्वार जाकर विद्याध्ययन का बहुत आग्रह करता है। यह बालक हरद्वार ही क्यों जाना चाहता है, यह एक रहस्य है, जिसके सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता।

१६—१३ मार्च सन् १६५५ के दैनिक हिन्दुस्तान (देहली) में एक युवती द्वारा पूर्व जन्म की घटना का विवरण प्रकाशित हुआ है। समाचार में बताया गया है कि एतमादपुर तहसील के एक गांव थलू की गढ़ी, के ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न एक लड़की का विवाह इसी तहसील के एक अन्य गांव में उजरई में पंडित चेतराम के पुत्र श्री हीरालाल के साथ कर दिया गया था। यह लड़की सन् १६४२ ई० में अपने दो वर्षीय पुत्र को छोड़ कर रुग्णावस्था में मर गई। इस लड़का ने मृत्यु के ही दिन और उसी समय एतमादपुर के एक गड़रिया परिवार में जन्म ले लिया। बड़ी होने पर उसका विवाह गत वर्ष फीरोजाबाद में कर दिया गया।

इस वर्ष इस लड़की के एक परिवारीय भाई का विवाह थलू गढ़ी के एक गड़रिया परिवार की लड़की के साथ हुआ। जब इस लड़की की नई भाभी ने घर आकर उसके पैर ननद के नाते से छूने चाहे तो लड़की को अचानक अपने पूर्व जन्म का स्मरण हो

आया उसने अपने पैरों को अलग करते हुए भाभी से कहा कि मैं भी थलू गढ़ी की रहने वाली पंडित की लड़की हूं। इस लिये तू तो मेरी बहन लगती है। लड़की की इस प्रकार की बातें सुनकर परिवार वाले चकित रह गये और विभिन्न प्रकार की चर्चायें करने लगे। इसी बीच नई वधू का भाई अपनी बहन को लेने आया उसे भी लड़की ने तुरन्त पहचान लिया और अपनी पुरानी माँ तथा घर वालों के विषय में बहुत सी सत्य बातें बताई। लड़की ने वधू की विदा के समय अपने पूर्व जन्म के माँ बाप के यहाँ जाने का आग्रह किया परन्तु समझा बुझा कर उसे रोक लिया गया। गत ५ मार्च को उसकी पुरानी माँ और बड़े भाई चुप चाप लड़की से मिलने आये। वे बहुत से अनजान आदमियों और औरतों के साथ लड़की के घर पहुँचे। लड़की ने उन्हें भी तुरन्त पहचान लिया और नाम तक बता दिये। लड़की ने अपनी माँ और भाई को बहुत सी घरेलू गुप्त बातें बताईं, जो किसी को ज्ञात नहीं थीं। उसने अपने पूर्व पति से उत्पन्न पुत्र, पूर्व पति तथा उनके परिवार के विषय में भी बहुत सी सच बातें बताई हैं। पूर्ण विश्वास हो जाने पर लड़की के पूर्व जन्म की माँ और भाई लड़की को अपने घर ले गये।

२०—दैनिक हिन्दुस्तान दिल्ली दिनाङ्क १६-३-५५ में मुरादाबाद की एक घटना प्रकाशित हुई है। 'धर्म वीर' सम्पादक श्री देवकीनन्दन मिश्र की मारफत श्रीमती रचनादेवी ने लिखा है कि मेरे यहाँ एक कन्या लगभग १० वर्ष की आयु की है जो बड़ी धार्मिक और ईश्वर में अगाध विश्वास रखती है। कथा कीर्तन आदि में संलग्न रहती है। यह वर्षों से अपने पिछले जन्म की कथा हम घर वालों को सुनाया करती थी। मगर कभी किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। यह कन्या अपना पिछला जन्म

दिल्ली में बताती है और अपने दो लड़कों के नाम राधे और गोविंद बताती है। साथ ही घर की और वस्तुओं के बारे में कहती है कि वहां घर में एक मन्दिर है, जहां सब लोग पूजा करने आते थे और मेरे घर एक लाल और एक काली गाय मौजूद थी। अपने मकान का मुख्य दरवाजा लाल रंग का बताती है। अपने पिछले जन्म का घर मुहल्ला फाटक गली, चांदनी चौक, दिल्ली में बताती हैं। इसके पति भी उस समय (१० साल पहले) जीवित थे। मगर उनका नाम वह नहीं बताती। कहती है कि मुझ को मेरे राधे, गोविंद से मिलादो, जो बाजार गये थे।

२१—सन् १६३५ ई० में देहली की कुमारी शान्तीदेवी की समाचार पत्रों में विशेष चर्चा हुई थी।

कुमारी शान्ती देवी १२ अक्टूबर सन् १६२६ को मुहल्ला चीरा खाना देहली में बाबू रंगविहारी माथुर के घर पैदा हुई। अपने जीवन के चतुर्थ वर्ष तक यह प्रायः मौन रहा करती थी। उसके पश्चात् कुछ बोलने लगी, किन्तु इसकी बहुत सी बातें अपने पिछले जन्म के विषय में होती थीं, जैसे भोजन के समय वह कहा करती थी, मथुरा में अपने घर में इस प्रकार की मिठाई खाया करती थी। जब उसे वस्त्र पहनाये जाते तो बताती कि मथुरा में मैं इस तरह के कपड़े पहना करती थी। वह प्रायः कहती थी कि मैं जाति की चौबाइन थी और मेरा पति कपड़े बेचता था। वह अपने घर के सम्बन्ध में भी कई बातें बताती थी, जैसे यह कि मेरे घर का रंग पीला था और मेरे पड़ोस की दूकान इस प्रकार की थी। उसने कई बार मथुरा जाने की इच्छा प्रकट की परन्तु उसके मां बाप ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उनका विश्वास था कि पिछले जन्म की बातें बताने वाले बच्चे देर तक जीवित नहीं रहते। यह कन्या अपने पति का नाम नहीं बताती

थी परन्तु कहती थी कि मैं उसे पहचान लूंगी। एक दिन लड़की के दादा के भाई बिशनदास ने कहा कि अगर तुम मुझे अपने पति का नाम बता दोगी तो मैं तुम्हें मथुरा ले चलूंगा। लड़की ने उनके कान में कहा कि मेरे पति का नाम है पं० केदारनाथ चौबे।

जब मथुरा इस पते पर पत्र लिखा गया तो वहां से पं० केदारनाथ चोबे का उत्तर प्राप्त हुआ कि लड़की जो बातें बताती है वे सत्य हैं। मेरे चचेरे भाई पं० कांजीमल को जो देहली में मैसर्स भानामल गुलजारीमल की फर्म में काम करते हैं, लड़की से मिलाया जाय। लड़की ने पं० कांजीमल को देखते ही पहचान लिया और उनके प्रश्नों के जो उत्तर दिये वे एक घर का आदमी ही दे सकता है। उदाहरणार्थ उसने बताया, मेरे दो बच्चे हुए थे। एक लड़का और एक लड़की और मैंने १५०) रुपये घर में अमुक स्थान पर दबाये थे। उसने पूछा कि मेरे लड़कों का क्या हाल है? पं० केदारनाथ चौबे को देहली बुलाया गया जो १३ नवम्बर सन् १६३५ को अपनी वर्तमान पत्नी और १० वर्ष के लड़के के साथ मथुरा से देहली आये। लड़की को बताया कि तुम्हारे पति का भाई तुमसे मिलने आया है, परन्तु उसने दर्शकों की भीड़ में भी अपने पति और अपने लड़के को पहचान लिया। वह घंटे भर तक रोती रही और सिसकियां लेती रही। पूंछने पर उसने सिर झुकाकर बताया कि ये मेरे पति हैं। केदारनाथ ने लड़की से कुछ प्रश्न किये और ठीक उत्तर मिलने पर उनके भी आँसू निकल पड़े। शान्तिदेवी ने अपने १० वर्षीय बालक को बड़ा प्यार किया और अन्दर से खिलौने लाकर उसे दिये। लड़को मथुरा जाने के लिए अत्यन्त आग्रह करने लगी।

अन्त में २५ नवम्बर सन् १९३५ को लड़की के मां बाप और दूसरे आदमी मथुरा गये। गाड़ी में लड़की बहुत प्रसन्न थी। मथुरा स्टेशन आने पर उसने स्टेशन और आस पास के स्थानों को पहिचान लिया। अपने जेठ को देखकर उसने उनके पाँव छुये और बताया कि ये मेरे जेठ हैं। लड़की को घोड़ा गाड़ी की अगली सीट पर बैठाया गया और वह मार्ग बताती हुई अपने घर पर सब लोगों को ले गई। मार्ग में उसने ७५ वर्ष के एक वृद्ध ब्राह्मण को पहिचान लिया जो उसके ससुर थे और मान के साथ उनके पांव छुये। उसने अपने घर के सब स्थानों को भली प्रकार पहिचान लिया और वहां एक कौने में पांव रख कर कहा कि यहां मेरा रुपया है, इसे खोदो। खोदने पर एक घल्ला मिला परन्तु उसमें रुपया न था। केदारनाथ ने बताया कि पत्नी की मृत्यु के पश्चात् रुपया उन्होंने निकाल लिया था। मथुरा आकर उसने अपने माँ-बाप को पहिचाना और उनसे गले मिली। मां बाप फूट फूट कर रोते थे।

लड़की का पहले जन्म का नाम लुगदी था जो १८ ज़नवरी सन् १९०२ को पैदा हुई और ४ अक्टूबर सन् १९३५ को आगरा अस्पताल में मरी थी।

२२—सन् १९५३ में समाचार पत्रों में फरुखाबाद की एक घटना प्रकाशित हुई जो निम्न प्रकार है—

सीतापुर (उत्तर प्रदेश) के मोहल्ला लालबाग और थामसन गंज के निकट एक बहुत बड़ा फाटक है जिसमें लक्ष्मण प्रसाद और जगन्नाथ फर्म के स्वामी बैजू बाबू रहते थे। वे वहाँ के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और सीतापुर नगर पालिका के चेयरमैन भी रह चुके थे। उनके पास मोटर गाड़ी भी थी। उनके

एक फोड़ा निकला जिसकी चिकित्सा लखनऊ और देहली में कराई गई किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ और अन्त में उससे उनकी मृत्यु हो गई।

फरुर्खाबाद के श्री बैजनाथ टंडन (जिनकी कपड़े की दुकान है) के यहां सीतापुर के बैजू बाबू की मृत्यु के चार मास पश्चात् सं० २००५ में एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम श्याम नाथ रखा गया। चार पांच वर्ष की अवस्था में उसने अपने आपको सीतापुर का बैजूबाबू बताना प्रारम्भ कर दिया। कानपुर में अपनी ससुराल बताता था और कहता था कि मेरे भाई, मां और पत्नी हैं। यह संवाद जब सीतापुर पहुंचा तो बैजू बाबू का मोटर ड्राइवर फरुखाबाद आया। श्याम नाथ ने देखते ही पूछा कि तुम यहां कहाँ ? ड्राइवर के हाथ की घड़ी को देख कर उसने तुरन्त ही पहचान लिया, जो कि उसकी ही दी हुई थी। ड्राइवर ने चावियों का गुच्छा श्यामनाथ के सामने डाल दिया और कहा कि बताओ मोटर गैरिज की चावी कौन सी है ? इस बालक ने चावी को बतादिया। जब ड्राइवर ने एक चवन्नी मीठा खाने को दी तो उसने कहा कि तुमको लज्जा आनी चाहिए कि तुम मुझे चवन्नी देते हो जबकि मैं तुमको नित्य बहुत से रुपये दिया करता था और चवन्नी लेना अस्वीकार कर दिया।

ड्राइवर के सीतापुर लौटने पर उसके भाई आदि फरुर्खाबाद आये और श्यामनाथ को बाबू बैजनाथ टंडन के साथ अपनी कार में सीतापुर ले गये। सीतापुर को देखते ही उसने कहा कि यह सीतापुर है और अपने मकान का ठीक ठीक पथ-प्रदर्शन किया। उसने अपनी माता के चरण छुए और अपनी पत्नी को तुरन्त पहचान लिया। उसने अपने सर्राफे की दूकान देखी और मन्दिर में जाकर पूजा की। तीन दिन वहां रखकर उसे फिर फरुर्खाबाद ले आया गया।

२२—श्री सतीशचन्द्र सुपुत्र श्री श्यामलाल, अग्रवाल वैश्य, निवासी बयाना जिला भरतपुर (राजस्थान) का जन्म १६ दिसम्बर १९३२ ई० को हुआ। जब इस बालक की अवस्था ४-५ वर्ष थी उसने अपने गत दो जन्मों का वृतान्त बताना प्रारम्भ कर दिया। श्री सतीश चन्द्र ने बी० काम० परीक्षा उत्तीर्ण करली है और अब एल० एल० बी० में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उनका पूर्व जन्म आज से लगभग ६७ वर्ष (सन् १८८८ ई०) ग्राम महावन, जिला मथुरा (उत्तर प्रदेश) के एक भटनागर कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पूर्व जन्म का नाम किशनजीवन था। इनके पितामह कोटा राज्य में दीवान थे। इनकी एक बहन और एक भाई था। विमाता से दूसरा भाई विश्वम्भरदयाल था। बहन, विश्वम्भरदयाल, तथा विमाता (१९५४) जीवित हैं और सतीशचन्द्र का उनसे अब भी सम्पर्क है। इनकी माता का इनको १॥ वर्ष का छोड़कर देहान्त हो गया था और इन्हें धीवल नाम की एक धाय ने पाला था। सतीशचन्द्र की मृत्यु १९ वर्ष की अवस्था में सन् १९०७ ई० में हो गई थी। इनका दूसरा जन्म एक सर्प की योनी में हुआ और वह महावन के अपने मकान में, पितामह के गढ़े धन पर बैठे रहते थे। सर्प योनि में इन्होंने किसी को काटा नहीं। यह मकान एक दूसरे व्यक्ति को बेच दिया गया और उसने इस सर्प को मार कर वह धन निकाल लिया। यह व्यक्ति अब भी अहमदाबाद में रहता बताया जाता है। इस प्रकार सतीशचन्द्र सन् १९०७ से १९३२ ई० तक २५ वर्ष सर्पयोनि में रहे। इस घटना की समाचार पत्रों में प्रर्याप्त चर्चा चली थी और अनुसधांन करने पर उपयुक्त समस्त विवरण सत्य सिद्ध हुआ। (कल्प वृक्ष-मासिक पत्र, उज्जैन, जनवरी, फरवरी १९५५ ई० से संकलित)।

अब यहां उन घटनाओं का, जो यदा-कदा समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई हैं और जिन्हें लेखक ने स्वयं पढ़ा है, किन्तु उनके उद्धरण संग्रह नहीं किये गये, उल्लेख किया जाता है। इन घटनाओं के सम्बन्ध में पूर्ण अन्वेषण किया गया था और सब सत्य सिद्ध हुईं थीं।

२४—बिसौली जिला बदायूं (उत्तर प्रदेश) में एक बालक अपने को गत जन्म का मुरादाबाद निवासी कहता था। मुरादाबाद ले जाने पर वह अपने घर का मार्ग स्वयंमेव निर्देश करता गया। उसने अपने भाई आदि परिवार वालों को पहचाना और मोहन ब्रदर्स सोडा फेक्टरी को, जिसका वह संचालन करता था, जाकर दिखाया। वह स्थान (गद्दी) जहां वह फैक्टरी में बैठा करता था, को निर्दिष्ट किया इत्यादि।

२५—बंगाल में एक हिन्दू बालक को समस्त कुरान कंठस्थ था। वह पिछले जन्म में अपने को एक निकट वर्ती स्थान का मौलवी बताता था। जांच कराने पर बात सत्य सिद्ध हुई।

२६—मध्य भारत में एक मुसलमान के घर एक बालक ने जन्म लिया जो फारसी बोलता था और अपने को बाबर बादशाह बताता था। लोग दूर २ से उसे देखने आते थे। उस समय समाचार पत्रों में इसकी पर्याप्त चर्चा चली थी।

२७—सम्भल जिला मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) का एक मुसलमान बिसाती जो गांवों में घूम कर अपनी वस्तुयें बेचता था मर कर एक निकट के स्थान में हिन्दू के घर उत्पन्न हुआ। उसे अपने पूर्व जन्म की स्मृति थी।

२८—इंगलैंड के एक बड़े नगर में कुछ वर्ष हुये रानी ऐलीजाबेथ का ऐतिहासिक चल-चित्र एक सिनेमा घर में दिखाया जा रहा था। जब रानी मेरी के वध की घटना चित्र पट पर आई

तो एक लड़की जो सम्भवतः उस समय बारह तेरह वर्ष की थी, खड़ी होकर चिल्लाने लगी कि यह सर्वथा असत्य है। घटना इस प्रकार नहीं, इस प्रकार थी। उसने कहा कि वह उस समय वहाँ उपस्थित थी। इस लड़की ने अपने उस जन्म का नाम भी बताया और कहा कि वह रानी की परिचारिकाओं में थी। इस घटना ने वहाँ बड़ी हलचल मचा दी और वह वहां के बहुत से पत्रों में प्रकाशित हुई थी।

अब उन घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है जिनको लेखक ने कुछ प्रतिष्ठित एवं विश्वसनीय व्यक्तियों से सुना था। जिनकी जांच उन्होंने स्वयं की थी और सत्य पाया था।

२९—हाथरस जिला अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) के दो बालक एक स्थान पर एक संस्कार-समारोह में सम्मिलित हुये। एक बालक को दूसरे बालक की टोपी देखकर अपने पूर्व जन्म की स्मृति जाग्रत हो गई। उसने दूसरे बालक की टोपी छीनने का प्रयत्न किया और कहा कि यह टोपी उसकी है। उसकी मथुरा में टोपियों की दूकान थी और यह टोपी उसी दूकान की है। दूसरे बालक की माता ने बताया कि यह टोपी वास्तव में मथुरा से ही मोल ली गई थी। इस घटना से उक्त बालक रोष में आ गया और कहने लगा कि उसकी पत्नी ने उसे विष देकर मारा था। मैं उसे जाकर जान से मारूंगा इत्यादि।

तहसील अतरौली, जिला अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) के एक तहसील के कर्मचारी श्री गोपीनाथ ने जो खुर्जा (बुलन्दशहर) के निवासी थे, लेखक को खुर्जा की निम्नलिखित घटनाएं सुनाई।

३०—वहाँ के एक सेठ के दो छोटे पुत्रों ने यह कहना प्रारम्भ कर दिया कि उनको अमुक साधु के पास जो अमुक पहाड़ी पर रहता है, ले चलो। उन्होंने बताया कि गत जन्म में वे बन्दर

थे और उक्त साधु ने उन्हें पाल रखा था। कुछ समय पश्चात् उनके पिता उन्हें उस स्थान पर ले गये। साधु ने अपने दो पालतू बन्दरों का होना स्वीकार किया।

३१—इन्हीं सज्जन ने एक दूसरी घटना का वर्णन किया। जिला एटा के ग्राम में एक मुसलमान बालक को अपने पूर्व जन्म की स्मृति हो गई जिसमें कि वह निकट के एक ग्राम का ब्राह्मण था। बड़ा होने पर इस बालक ने अपने मुसलमान परिवार से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया और ग्राम के बाहर एक झोंपड़ी में रहने लगा। इसने कुछ गौयें पाल रखी थीं उन्हीं से अपना जीवन-यापन करता था।

३२—श्यामगढ़ी, तहसील इगलास, जिला अलीगढ़ में किसी ग्राम का एक चर्मकार बालक प्राइमरी स्कूल में पढ़ता था। वह कक्षा में बोलता नहीं था। एकदिन अध्यापक ने उसे मौन रहने पर पीटा। उस बालक ने कहा कि समस्त पाठ और गणित जो वह (अध्यापक) उसे पढ़ाता है उन्हें वह पहले से ही जानता है। उसने आगे की कक्षाओं के गणित के प्रश्न निकाल दिये। उसने बताया कि वह निकट के अमुक ग्राम का अमुक ब्राह्मण है। उसने अपने परिवार आदि का पूरा परिचय दिया जाँच करने पर वह सब सत्य सिद्ध हुआ। इस बालक को ऊंची कक्षा में उसकी योग्यतानुसार चढ़ा दिया गया।

३३—ग्राम रमपुरा तहसील सहसवान जिला बदायूं के एक अहीर जाति के व्यक्ति ने अपने ही पुत्र के यहाँ जन्म लिया। कुछ बड़ा होने पर उसने अपनी दादी को अपने पूर्व जन्म की पत्नी और पिता को अपना पुत्र कहना प्रारम्भ कर दिया। वह अपने जीवन काल की बहुत सी घटनाओं को बताता था जिससे उसके कथन की सत्यता में अविश्वास नहीं किया जा सकता था। इस बालक की निकट के ग्रामों में बड़ी चर्चा रही।

३४—रसूलपुर तहसील गुन्नोर जिला बदायूं के एक मुसलमान लोहार की कन्या को पूर्व जन्म की स्मृति हो आई। वह गत जन्म में ब्राह्मणी थी इसने आजन्म अपने हाथ से रोटी बनाकर खाई और मुसलमान परिवार के हाथका भोजन कभी नहीं किया।

३५—स्वर्गीय श्री कालिकाप्रसाद इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स उत्तर-प्रदेश ने लेखक को बताया कि उनके एक मित्र (जो उस समय मुंसिफ थे) का पुत्र रुग्ण हो गया। एक दिन वह बालक आग्रह करने लगा कि उसे उसके पिता से कुछ रुपये (जिनकी निश्चित संख्या लेखक को विस्मृत हो गई है) दिला दो। कारण पूछने पर बालक ने बताया कि गत जन्म में वह अमुक ग्राम का एक क्षत्रिय जमींदार था और सरकारी मालगुजारी जमा करने तहसील जा रहा था मार्ग में उसके वर्तमान पिता (मुंसिफ साहब) ने जो उस जन्म में डाकू थे, उससे वह रुपया छीन लिया और उसे मार डाला। अब उसका इतना ही रुपया शेष रह गया है जिसकी कि वह आग्रह पूर्वक बार-बार मांग कर रहा था।

जब मुंसिफ साहब को यह बताया गया तो उन्होंने उसे मूर्खता पूर्ण आलाप कहा। परन्तु बालक के मामा ने आग्रह करके वह रुपया बालक को दिया। जैसे ही यह रुपये बालक के हाथ पर रखे गये उसका प्राणान्त हो गया। उक्त मुंसिफ साहब ने इन्सपेक्टर साहब को यह घटना बताते हुये कहा—आज मैं मुसिफ हूं किन्तु पूर्व जन्म में डाकू था, कैसी विचित्र बात है।

मैंने यहां पूर्व जन्म स्मृति की ३५ घटनाओं का जिनकी सत्यता और प्रामाणिकता असंदिग्ध है, संग्रह किया है। ऐसी और भी घटनाओं का विवरण संग्रह किया जा सकता है जिनका उल्लेख पाश्चात्य तथा प्राच्य विद्वानों एवं दार्शनिकों ने अपनी अनेक पुस्तकों में किया है परन्तु मैंने इनका उद्धरण ग्रन्थ विस्तार भय

से यहां देना उचित नहीं समझा। समय समय पर मैंने इस प्रकार की अन्य घटनाओं के समाचार पत्र पत्रिकाओं में पढ़े और लोगों से सुने हैं किन्तु उनका पूर्ण विवरण न होने के कारण उन्हें भी देना उचित नहीं समझा।

इस प्रकार की स्मृति हमारे देश के बहुत से बालकों को हो जाती है परन्तु उनके संरक्षक उनको या तो इस भय से कि उस बालक का प्रेम अपने पूर्व जन्म के सम्बन्धियों से हो जावेगा अथवा इस अन्ध-विश्वास के कारण कि ऐसे बालक अधिक समय तक जीवित नहीं रहते, छिपाने का प्रयत्न करते हैं। एक कारण यह भी है कि ऐसे बालकों का पता लग जाने पर दर्शकों का ताँता लग जाने पर अभिभावकों को अनेक असुविधायें उपस्थित हो जाती हैं। पुनर्जन्म में हिन्दुओं की पूर्णास्था के फलस्वरुप ऐसी घटनाओं को साधारण सी बात समझा जाता है। परिणाम यह होता है कि उनका अन्वेषण करने को ओर किसी की विशेष रुचि नहीं होती। इन घटनाओं का हमारे जीवन के कितना महत्व है, इसका आभास बहुत कम लोगों को है। पूर्वजन्म स्मृति हमारे जीवन की कितनी गुत्थियों को सुलझाती है, इस पर ही हम यहां कुछ विचार करेंगे और उनका आगे के अध्यायों में सविस्तार विवेचन किया जावेगा।

पूर्वजन्म स्मृति, यह निर्विवाद रुप से सिद्ध करती है कि मृत्यु जीवन का अन्त नहीं है। अपितु मृत्यु के पश्चात् जन्म और जन्म के पश्चात् मृत्यु, यह चक्र सदा चलता रहता है। यदि पंच-तत्व से बने इस शरीर के अतिरिक्त आत्मा जैसी कोई चेतन सत्ता नहीं है, जैसा कि भौतिकवादियों का मत है, तब यह स्मृति किसको रहती है ? पंचतत्व से बना हुआ शरीर मृत्यु के उपरान्त नष्ट हो जाता है, यह हम नित्य देखते हैं। ऐसी अवस्था में दूसरे

जन्म में पूर्व की जो स्मृति बनी है, उसका आधार क्या है ? मैं समझता हूं कि भौतिक वादियों के पास इसका कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं है। मुझे ऐसे भी व्यक्ति मिले जो इन प्रत्यक्ष स्मृति घटनाओं को पाखंड और ढोंग कहकर अपना मन बहलाव कर लेते हैं। ऐसे हठी और दुराग्रहियों के लिये तो समस्त युक्ति प्रमाण ही व्यर्थ और निरर्थक हैं। वास्तविकता यह हैकि इन प्रत्यक्ष प्रमाणों का इनके पास कोई युक्तियुक्त उत्तर ही नहीं है। शरीर से इतर किसी चेतन सत्ता के अभाव में पूर्वजन्म स्मृति असम्भव है। अतएव पूर्वजन्म स्मृति जहां पुनर्जन्म का प्रत्यक्ष प्रमाण है, वहां यह भी सिद्ध करता है कि हमारे इस पंचतत्व के शरीर में एक चेतन सत्ता है जो मृत्यु के उपरांत इस शरीर का परित्याग कर दूसरे शरीर में जाती है और वही इस स्मृति का परिवाहन है।

यह मान लेने पर कि शरीर से पृथक आत्मा का भीअस्तित्व है जो एक जन्म की स्मृति अपने साथ दूसरे जन्म में ले जाती है, प्रश्न होता है कि तब स्मृति सब बालकों को क्यों नहीं रहती थोड़ों को ही क्यों रहती है ? आत्म-अस्तित्व और पुनर्जन्म का सिद्धान्त मान लेने पर एक अन्य प्रश्न यह भी उठ खड़ा होता है कि क्या आत्मा स्वेच्छा से एक शरीर से दूसरे शरीर में जाता है अथवा कोई अन्य उससे प्रबल सत्ता है जो उसे एक शरीर से दूसरे में ले जाती,है?क्या आत्मा का यह आवागमन किन्हीं सुनिश्चित नियमों के आधीन चलता है अथवा अनियमित रुप से चल रहा है ? इन्हीं प्रश्नों पर इस पुस्तक के आगामी अध्यायों में विचार किया गया है।

दूसरा अध्याय

पूर्व जन्म स्मृति सब को क्यों नहीं होती ?

★

यदि, स्मृति आत्मा का गुण है और एक आत्मा अनेकानेक जन्म धारण करता रहता है तो सबको उन जन्मों की स्मृति क्यों नहीं रहती ? यह एक प्रश्न है जो प्रायः लोगों की ओर से उठाया जाता है। मैं यहां सूक्ष्म दार्शनिक गहराई में न जाकर कुछ मोटे उदाहरण ही दूंगा। हम नित्य देखते हैं कि जो भी कर्म हम मन, वाणी और शरीर से प्रतिदिन करते हैं वे हमें प्रायः घन्टों, दिनों और मासों में विस्मृत होजाते हैं, केवल कुछ विशेष घटनाओं की धुंधली सी स्मृति रह जाती है। जो कार्य जितना साधारण होता है हम उसे उतना ही शीघ्र भूल जाते हैं। स्थूल शरीर की अपेक्षा वाणी से, वाणी की अपेक्षा मन से किये गये कर्म हमें बिल्कुल विस्मृत होजाते हैं। स्वप्नों की विस्मृति तो हमें नित्य प्रातः उठते उठते हो जाती है। अतएव जहां आत्मा का स्मृति गुण है वहां विस्मृति भी है। यदि हमें एक जन्म की तो क्या, एक वर्ष के प्रत्येक कार्य की स्मृति बनी रहे तो हमारी अवस्था पागलों जैसी हो जावे। हम कुछ भी सोचने समझने में अशक्त हो जावें। तब जन्म जन्मान्तरों की तो बात ही क्या। अतएव यह एक हमारे लिये ईश्वरीय वरदान है कि हम उन्हें भूल जाते हैं। सोचिये, यदि हमें समस्त जन्मों के अपने सम्बन्धियों, मित्रों, बन्धुओं तथा शुभाशुभ कर्मों की स्मृति बनी रहे तो हम

ऐसे मानसिक गोरख धन्धे में फंस जांय कि हमारा जीवन ही दुर्लभ हो जाय।

हम जो भी कर्म करते हैं, उनके सूक्ष्म संस्कार हमारे मन पर अंकित रहते हैं और वे ही मृत्यूपरान्त शरीर के साथ दूसरे जन्म में जाते हैं। जिस प्रकार मानसिक कर्म तथा स्वप्न जो मन का ही व्यापार है हमें शीघ्र विस्मृत हो जाते हैं, उसी प्रकार मृत्यु होने पर गत जन्म की स्थूल घटनायें आत्माओं को विस्मृत हो जाती हैं, केवल उनके संस्कार शेष रह जाते हैं। जन्म लेने से पूर्व आत्मा कुछ समय तक माता के गर्भ में सुषुप्ति अवस्था में रहता है, अतएव पिछले जन्म की घटनाओं के विस्मृत होने का एक कारण यह भी हो सकता है। प्रायः वे रोगी जो महीनों मूर्छित अवस्था में रहे, अपने जीवन की पिछली समस्त घटनाओं को भूलते देखे गये हैं। वृद्धावस्था में बहुत से लोगों को विस्मरण रोग हो जाता है। कई सुशिक्षित व्यक्तियों को बुढ़ापे में अक्षर ज्ञान तक न रहते देखा गया है। अतः जब इसी जन्म में हमें कभी कभी समस्त घटनायें विस्मृत होजाती हैं तो मृत्यु, जो जीवन की एक अभूतपूर्व घटना है, के पश्चात् हमें गत जन्म की समस्त स्थूल घटनायें विस्मृत हो जायें तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ?

हमारे किये हुए कर्मों के संस्कार अमिट रूप से जन्म जन्मान्तरों में हमारे साथ रहते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण, यह है कि एक ही समय और परिस्थिति में उत्पन्न हुये बालक विभिन्न संस्कारों के होते हैं, एक तीव्र दूसरा स्थूल बुद्धि; एक कोमल स्वभाव अन्य कठोर प्रकृति। तात्पर्य यह है कि बालकों के ऐसे विभिन्न स्वभाव यह सिद्ध करते हैं कि वे गत जन्म के अपने प्रथक प्रथक संस्कार साथ लाये हैं। भौतिक वादियों की यह

व्याख्या कि यह उनके माता पिता के संस्कारों का परिणाम है, अपूर्ण है। क्योंकि हम बहुत से मूर्ख माता पिताओं के यहां अत्यन्त प्रतिभाशाली बालकों का जन्म होता हुआ देखते हैं। इसी प्रकार दुष्ट प्रकृति वालों के यहां साधु स्वभाव बालक जन्म ग्रहण करते पाये जाते हैं। बालक ही क्यों, मनुष्य की विभिन्न रुचियां जो वे अपने जन्म के साथ लाते हैं, आजीवन बनी रहती हैं। बहुत से लोग जिन्होंने गान विद्या को कभी नहीं सीखा, बड़ा सुन्दर गाते हैं, जबकि बहुत से अभ्यास करने पर भी अच्छा नहीं गा पाते। कुछ की चित्रकला में बाल्यावस्था से ही स्वाभाविक अभिरुचि होती है, जबकि दूसरे प्रयत्न करने पर भी अच्छे चित्रकार नहीं बनते। यह सब पूर्व जन्म के संस्कारों का परिणाम नहीं तो और क्या है ?

इससे सिद्ध है कि हमें गत जन्म की घटनायें वास्तव में भूलती नहीं केवल उनका रूप बदल जाता है। मनुष्य का हित भी जैसा कि हम सिद्ध कर चुके हैं, इसी में है कि वह उन घटनाओं के स्थूल रूप को भूल जावे। हां वे स्थूल घटनायें जो कभी कभी दूसरे जन्म में बाल्यावस्था में भी स्मृत रहती हैं, उनके विस्मृत न होने के कारणों का विश्लेषण कुछ महत्त्व रखता है। मैंने आरम्भ में जो पूर्व जन्म स्मृति की घटनायें दी हैं, उनसे यह प्रमाणित होता है कि प्रायः जिनकी मृत्यु आकस्मिक दुर्घटनाओं के कारण हुई है, उनको यह स्मृति बनी रहती है। उदाहरणार्थ वध किये जाने, विष देकर मारने, डूबकर मरजाने अथवा इसी प्रकार की अन्य घटनाओं द्वारा जिनकी मृत्यु होती है उन्हें पूर्व जन्म की कुछ स्मृति बनी रहती है। इसी प्रकार मृत्यु के समय जिनकी कोई अत्यन्त प्रबल आकांक्षा अवशेष रह जाती है, उनको भी कभी कभी ऐसी स्मृति हो जाती है। संक्षेप में मृत्यु

से ठीक पूर्व की वे महत्वपूर्ण घटनायें जो हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव डालती हैं, हमारे स्मृति-पटल पर गहरे रूप में अंकित हो जाती हैं और वे ही कभी कभी दूसरे जन्म में स्मृत होजाया करती हैं। यह स्मृति कभी कभी पचासों और सैकड़ों वर्षों के पश्चात् किसी कारण विशेष से उभर आती है, जो सम्भवतः बीच के जन्मों में तिरोभूत अवस्था में दबी पड़ी रहती है। यह भी हो सकता है कि हम बीच के इस लम्बे काल में ऐसी योनियों में रहे हों जिनमें ज्ञान की मात्रा अत्यंत न्यून हो अथवा जिनमें हम अपने मनोभाव व्यक्त करने की क्षमता न रखते हों। इसके और भी अनेक कारण हो सकते हैं जिनके दार्शनिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता है।

तीसरा अध्याय

(पुनर्जन्म)

★

जैसा कि पूर्व लिखा जा चुका है, पूर्व जन्म स्मृति पुनर्जन्म का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है, जिसे सिद्ध करने के लिये किसी अन्य युक्ति की आवश्यकता शेष नहीं रहती। भारतवर्ष के आर्य इसे आदि काल से मानते चले आये हैं। आप किसी साधारण से साधारण अपठित हिन्दू से पूछिये, वह इस सिद्धान्त पर अपना अटल विश्वास प्रकट करेगा। यहां कोई हिन्दू सम्प्रदाय आपको ऐसा नहीं मिलेगा जो इस पर विश्वास न करता हो। यहां तक कि जैन और बौद्ध, अवैदिक सम्प्रदाय भी इस सिद्धान्त पर आस्था रखते हैं। वेद, उपनिषद्, शास्त्र, स्मृति, पुराण-इतिहास सभी यह प्रतिपादन करते हैं कि आत्मा, मृत्यु के पश्चात् एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में इसी प्रकार जाता है जैसे कि हम पुराने वस्त्रों को उतारकर नयों को धारण करते हैं।

हम यहां पुनर्जन्म पर वेद तथा अन्य धर्म शास्त्रों के प्रमाण नहीं दे रहे, वह केवल इसलिये कि यह आर्य जाति का एक सर्व-मान्य सिद्धान्त रहा है और आज भी है। हिन्दू सम्प्रदायों में जहाँ अन्य विषयों पर मतभेद है वहां इस सिद्धान्त पर सब एक मत हैं। अतएव प्रमाण संग्रह को हमने इस विषय में अनावश्यक समझ कर छोड़ दिया है।

संसार में वैदिक धर्म के अतिरिक्त बौद्ध, ईसाई तथा इस्लाम तीन प्रमुख मत प्रचलित हैं। बौद्ध मत प्रसार से पूर्व भी चीन

निवासी इस सिद्धान्त पर विश्वास करते थे ऐसे प्रमाण मिलते हैं। ईसाई और इस्लाम सम्प्रदाय पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते परन्तु, बाइबिल तथा कुरान में ऐसे स्थल हैं जिनसे इस सिद्धान्त की पुष्टि होती है। ईसाइयत और इस्लाम से पूर्व फ्रांस, इंगलैंड यूनान आदि योरूपीय तथा अरब, ईरान, मिस्र आदि एशियाई देश निवासी आवागमन में विश्वास रखते थे, इसके अनेक ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हैं।

बाइबिल में राजाओं की दूसरी पुस्तक पर्व २ आयत ८, १५ में वर्णन है कि एलियाह नबी की आत्मा मरने के पश्चात् एलीशा में आगया। इसी प्रकार मलाकी पर्व ४ आयत ४-५-६ में परमेश्वर ने इसी एलियाह नबी को भेजने की बात कही है। मती पर्व ११ आयत १०-१३ में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को ही पूर्वजन्म का एलियाह नबी बताया है। आरम्भ में ईसाइयों के कुछ गुप्त सिद्धान्त थे जिनमें पुनर्जन्म भी सम्मिलित था। पाल और ईसाई गुरुओं के लेखों में इसका संकेत है। औरिजन में इसका स्पष्टतया उल्लेख किया है। ईसाई मत का एक सम्प्रदाय नास्टीसिज्म, इस सिद्धान्त को प्रगट रूप में मानता था। परिणामतः अन्य ईसाई सम्प्रदाय इसके अनुयायियों को कष्ट पहुँचाते थे। इसी प्रकार साईमेनिस्ट, बेसीलियिन, वैलेन्टीनियन माशीनिस्ट तथा मैनीचियन आदि अन्य ईसाई सम्प्रदाय थे जो पुनर्जन्म मानते थे। ईसा की छठी शताब्दी में चर्च की कौंसिल में कुछ सिद्धान्तों का मानना पाप उद्घोषित किया गया जिनमें पुनर्जन्म भी एक था और सम्राट् जस्टीनियन ने राजाज्ञा द्वारा उनके मानने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

इसलाम भी पुनर्जन्म के सिद्धान्त को नहीं मानता, परन्तु कुरान में ऐसी आयतें हैं जो इस सिद्धान्त की स्पष्ट शब्दों में पुष्टि करती हैं। उनमें से कुछ यहां दी जाती हैं:—

क्यों कुफ्र करते हो साथ अल्लाह के और थे तुम मुर्दे पस जिलाया तुमको फिर मुर्दा करेगा तुमको फिर जिलायेगा तुमको फिर तरफ उसके फिर जाओगे। सू० रु० ३ आ० ७।

अल्लाह वह है जिसने पैदा किया तुमको फिर रिज़्क़ दिया तुमको फिर मारेगा तुमको फिर जिलाएगा तुमको।

सू० रु० ३० रु० ४ आयत १३।

जैसा पैदा किया तुमको पहली बार फिर आओगे। सूरते ऐराफ ७ रुकु० ३ आ० ४। कहेंगे अय रब हमारे मारा तूने हमको दो बार और जिलाया तूने हमको दो बार पस इक़रार किया हमने साथ गुनाहों अपनों के पस क्या है तरफ निकलने के। सू० मौमिन ४० रु० २ आ० २। कहा क्या खबर दूं मैं तुमको......लानत की उसको अल्लाह ने और गुस्सा हुआ ऊपर उसके और किये उनमें बन्दर और सूअर इत्यादि सू० मायदा ५ रु० ६ आ० ५।

जैसा कि ऊपर लिख चुके हैं इस्लाम के प्रचार से पूर्व अरब निवासी इस सिद्धान्त में विश्वास रखते थे। वाकर ने लिखा है कि अरब के दार्शनिकों को यह सिद्धान्त बहुत प्रिय था और कई मुसलमानों की लिखी पुस्तकों में अब भी इसका उल्लेख है। जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं पूर्व-जन्म-स्मृति की घटनायें मुसलमानों और ईसाइयों में भी होती हैं परन्तु सिद्धान्त हानि के भय से वे उसे छिपा लेते हैं, अथवा खुदा की कुदरत कहकर टाल देते हैं।

इस्लाम मत के इस सिद्धान्त को न मानने का एक कारण यह भी है कि जो सम्प्रदाय स्वर्ग नरक लोक, स्थान विशेष मानते हैं जहां मरने के पश्चात् आत्मायें जाती है; उनकी आवागमन से सिद्धान्त हानि स्पष्ट है। जब आत्मा कर्मानुसार आवागमन के चक्र में घूमता रहता है तो स्वर्ग-नरक कैसा? दूसरी कठिनाई इनके पैगम्बरों द्वारा पाप क्षमा कराने की उपस्थित होती है।

स्वकर्मानुसार जन्म मिलने पर पापों के क्षमा का प्रश्न ही नहीं रहता। सम्भवतः यही उपर्युक्त दो कठिनाइयां हैं जो इनको अपनी धर्म पुस्तकों में पुनर्जन्म का संकेत होने पर भी उसे मानने में बाधा उपस्थित करतीं हैं।

अफ्रीका और अमेरिका के आदि निवासी लोगों में भी पुनर्जन्म में विश्वास के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। मौल्डी नामक एक पुरातत्ववेत्ता ने इन जातियों में लकड़ी और पत्थर पर बने हुए चित्रों के आधार पर लिखा है कि इन लोगों में यह विश्वास सार्वजनिक था कि आत्मा मृत्यु होने पर शरीर से पृथक् हो जाती है। कुछ जातियों का विश्वास था कि आत्मा मरकर पुनः उसी शरीर में आजाता है; इसलिये उनमें मसाला लगाकर शव को देर तक सुरक्षित रखने की प्रथा थी। किंतु कई जातियां ऐसी भी थीं जो मृत्यूपरांत आत्मा का नये नये शरीरों में जन्म लेना मानती थीं।

योरूप के जिन यात्रियों ने पहले अफ्रीका में यात्रा की उन्होंने लिखा है कि कई स्थानों के लोग पुनर्जन्म को मानते हैं। इसी प्रकार प्रारम्भ में जो लोग अमेरिका गये उन्हें ज्ञात हुआ कि वहां के मूल निवासी इस सिद्धांत पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। यह विश्वास उनमें अब भी पाया जाता है।

उन पौराणिक हिंदू सम्प्रदायों के समक्ष जो आवागमन के साथ स्वर्ग-नरक भी मानते हैं तथा मृतक पितरों के नाम पर श्राद्ध तर्पण करते हैं; यही कठिनाई आ उपस्थित होती है। क्योंकि पुनर्जन्म के साथ स्वर्ग-नरक और श्राद्ध तर्पण सब व्यर्थ हो जाते हैं। ॐ

ॐ इस विषय पर विस्तृत अध्ययन के लिये पाठक प्रो० नन्दलाल खन्ना एम० ए० द्वारा लिखित 'पुनर्जन्म मीमांसा' जिसे शारदा मन्दिर--नई सड़क--देहली ने प्रकाशित किया है, पढ़ें।

चौथा अध्याय

आत्म अस्तित्व

*

जिस प्रकार पूर्व-जन्म-स्मृति, पुनर्जन्म का एक प्रत्यक्ष कारण है, ठीक उसी भाँति पुनर्जन्म आत्म-अस्तित्व का एक प्रबल प्रमाण है। आत्म-अस्तित्व को बिना स्वीकार किए पुनर्जन्म की कोई उचित व्याख्या केवल कठिन ही नहीं अपितु असम्भव है। यही कारण है कि संसार के समस्त दार्शनिक जो पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं, आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। अतएव पूर्व-जन्म-स्मृति आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए एक ऐसा अकाट्य प्रमाण है जो संसार के समस्त भौतिक-वादियों के लिए एक खुली चुनौती देता है। ये स्मृति घटनाएं आज उनके लिए एक पहेली और उलझन बनी हुई हैं। परिणाम यह है कि पश्चिम के अनेक वैज्ञानिक अब न केवल आत्मा अपितु ईश्वर के अस्तित्व में भी विश्वास करने लगे हैं। उनको अब यह मानने के लिए विवश होना पड़ा है कि आत्मा एवं ईश्वर में विश्वास किए बिना केवल भौतिक जगत् इस सृष्टि की पूर्ण व्याख्या करने में असमर्थ है।

अभी अलीगढ़ का एक ६-७ वर्षीय बालक जो अंग्रेजी और संस्कृत के किसी भी ग्रन्थ को पढ़ देता है और पशु पक्षियों के सुन्दर रेखाचित्र बनाता है, वैज्ञानिक परीक्षण के लिए अमेरिका लेजाया गया है। देहली में भी भारतीय प्रशासन द्वारा कुछ समय

उसे वैज्ञानिकों एवं शरीर शास्त्रियों के निरीक्षण में रखा गया। परन्तु क्या केवल भौतिक विज्ञान के आधार पर इसकी कोई व्याख्या सम्भव है ? आत्मा भौतिक विज्ञान की पहुँच से परे है, अतएव वह उसका कोई विश्लेषण नहीं कर सकता।

भौतिकवादी शारीरिक चेतना के सम्बन्ध में बहुत समय से अटकलें लगाते चले आ रहे हैं। आधुनिक भौतिकवादियों का कहना है कि कार्बन, उद्जन, अम्लजन, नत्रजन का रासायनिक सम्मिश्रण ही हमारी शारीरिक चेतना का कारण है। यदि बात ऐसी है तो इन तत्वों को मिलाकर वैज्ञानिकों द्वारा चेतना उत्पन्न करके उसी प्रकार दिखाई जानी चाहिए, जिस प्रकार कि वे सहस्रों निर्जीव वस्तुएँ बनाने में समर्थ हुए हैं। अन्य युगों में भी ऐसी ही युक्तियाँ दी जाती रहीं हैं। उसमें एक प्रसिद्ध युक्ति कि कुछ तत्वों के रासायनिक सम्मिश्रण से जिस भाँति मादकता उत्पन्न हो जाती है उसी प्रकार चेतना भी कुछ रासायनिक सम्मिश्रण का परिणाम है, प्रसिद्ध है। परन्तु क्या मादकता का अनुभव बिना चेतना के सम्भव है ? मादकता स्वयं चेतना नहीं है, अपितु चेतन सत्ता द्वारा ही मादकता का अनुभव होता है। यदि मद्य बिना चेतना के स्वयं मादकता उत्पन्न कर देती तो एक मृतक शरीर के मुख में उसे उडेलने से उसमें मादकता आनी चाहिये, किन्तु ऐसा नहीं होता। बिना आत्मा को माने केवल पञ्चभूत, इस शारीरिक चेतना की सिद्धि नहीं कर सकते। तप, त्याग, परोपकार सहानुभूति; प्रेम; धैर्य एवं पूर्णता प्राप्त करने की महत्वाकांक्षा मनुष्य में केवल भौतिक तत्वों के सम्मिश्रण का परिणाम तो नहीं हो सकती।

पूर्व जन्म स्मृति की उपस्थिति में अन्य दार्शनिक युक्ति-प्रमाण प्रस्तुत करना विषय को अनावश्यक विस्तार देना है। स्मृति

तथा विस्मृति जैसा कि पूर्व लिखा जा चुका है; भौतिक शरीर का कार्य नहीं है। स्मृति क्या है और वह आत्म-अस्तित्व में क्यों प्रमाण है, इस पर यहां संक्षेप में कुछ विचार करलें। आज हम जिस वस्तु को आंख से देख, ज्ञान प्राप्त करते हैं क्या वह ज्ञान आंख के पास सुरक्षित रहता है? यदि ऐसा हो तो जो दृश्य हमने देखा है वह सदा आँख के सामने बना रहे और दूसरी कोई वस्तु न देख सकें। यही बात अन्य ज्ञानेन्द्रियों के सम्बन्ध में है। अतएव सिद्ध हुआ कि आंख उस ज्ञान को किसी दूसरे को सोंप देती है। यदि हम मन को वह कोषाध्यक्ष मानें जिसे वह ज्ञान सोंपा गया है तो मन स्वयं इन्द्रियों से कहीं अधिक चञ्चल है। मन में तो एक समय में एक से अधिक बातें ठहर ही नहीं सकतीं। स्मृति शरीर का धर्म भी नहीं है; क्योंकि शरीर नष्ट होने पर भी दूसरे जन्म में यह स्मृति बनी रहती देखी जाती है। स्मृति उसी समय हो सकती है जब किसी वस्तु को पहले देखने या सुनने वाली और पुनः स्मरण करने वाली सत्ता एक ही हो। देखा किसी ने और स्मरण कोई अन्य करना चाहे यह असम्भव है। अतएव स्मृति के लिये अपरिवर्तनशील सत्ता की आवश्यकता है। वह वस्तु अप्राकृतिक ही हो सकती है क्योंकि प्रकृतिजन्य वस्तुएें तो सदा परिवर्तित होती देखी जाती हैं। थोड़ी देर के लिए यदि स्मृति को शरीर का धर्म मान भी लिया जाय तो शरीर नित्य परिवर्तित होता रहता है, ऐसा वर्तमान शरीर शास्त्रियों का मत है। तब जिस घटना को २५ वर्ष पूर्व देखा गया था, उसकी स्मृति शरीर द्वारा कैसे सम्भव है? शरीर परिवर्तन के साथ ही वह नष्ट हो जानी चाहिये।

अतः सिद्ध है कि यह स्मृति किसी चेतन सत्ता को ही बनी रहती है और उसी का नाम जीवात्मा है। स्मृति और विस्मृति

ये दोनों ही जीवात्मा को होती रहती हैं। स्मृति के रहने, न रहने दोनों ही में उसका हित है इसे हम पहले स्पष्ट कर आए हैं।

कई अवस्थाओं में मनुष्य को भावी घटनाओं का आभास होते देखा जाता है। बहुत से लोग अपनी मृत्यु का समय पहले से ही बतादेते हैं। ऐसे ही कभी २ बहुत से लोग प्रबल इच्छा होने पर भी किसी कार्य को करते २ रुक जाते हैं और अनायास भावी भीषण घटनाओंसे बच निकलते हैं भौतिकवादी इसे आकस्मिक घटना कह कर टाल सकते हैं परन्तु बात ऐसी नहीं है। कभी कभी ऐसे आभास स्वप्नावस्था में हो जाते हैं जो आगे चलकर सत्य सिद्ध होते हैं। ऐसा भी होते देखा गया है कि लोगों को दूर देशस्थ अपने सम्बन्धियों के लिए अचानक चिन्ता होने लगती है और उनके किसी असम्भावित अनिष्ट का उन्हें आभास हो जाता है जो ठीक सिद्ध होता है। इसी प्रकार सम्मोहन क्रिया द्वारा रोगों की चिकित्सा एवं प्लांचिट यन्त्र, मेज हिलने आदि की क्रिया यह सिद्ध करते हैं कि शरीर से प्रथक कोई चेतन तत्त्व अवश्य है यद्यपि इन प्रक्रियाओं द्वारा मृतक आत्मा बुलाने का प्रदर्शन केवल ढोंग मात्र है। जिसका भांडा फोड़ स्वयं पश्चिम् के विद्वानों ने जहाँ इसका जन्म हुआ है, किया है।*

इस प्रकार के आध्यात्मिक चमत्कारों का वर्णन योग-दर्शन में किया गया है। प्राचीन काल में जब योग विद्या का इस देश में पर्याप्त प्रचार था योगियों द्वारा किए गए ऐसे अलौकिक कार्यों का वर्णन मिलता है। परन्तु इनकी योग दर्शन में निन्दा की गई है और उन्हें योग में बाधक बताया गया है।

* प्रसिद्ध आर्य विद्वान् महात्मा नारायण स्वामी जी ने अपनी पुस्तक "मृत्यु और परलोक" में इस विषय का सविस्तार विवेचन किया है।

कई वर्ष हुए इंगलैंड के एक समाचार पत्र में भारत स्थित किसी अंग्रेजी व्यावसायिक संस्था के एक अधिकारी का लेख एक भारतीय योगी के अलौकिक कार्यों के सम्बन्ध में प्रकाशित हुआ था। पूना के मराठी पत्र 'केसरी' ने उसे प्रकाशित किया था। उसने लिखा था कि शिमला के ऊपर पहाड़ पर छुट्टियाँ मनाने जाते समय उसका साक्षात्कार एक योगी से हो गया। उसने बताया कि मैं एक संकरी पगदण्डी पर जा रहा था। उस पर एक छोटे सर्प को पड़ा देख कर मैं ठिठक गया। उसी समय ऊपर पहाड़ी से किसी ने कहा, 'साहब! डरो मत, चले आओ!' मैंने ऊपर आंख उठा कर देखा तो साधु अपनी तीव्र दृष्टि उस पर डाल रहा था और वह सर्प मार्ग के एक ओर सीधी लकड़ी की भांति पड़ा था। मैं आगे बढ़ गया और वह सर्प पुनः अपनी पूर्वावस्था में आ गया। मैंने अनुमान लगाया कि यह साधु कोई योगी है और मैं उससे मिलने उसकी कुटिया की ओर चढ़ गया। बातें करते हुए मेरी जेब से कुछ पत्र और एक फोटो जो मेरी कम्पनी के सम्बन्धित अधिकारियों का था, निकल पड़े साधु ने एक पत्र को हाथ में लेकर कहा कि यह पत्र जिस व्यक्ति का लिखा है, वह दूसरे के धन पर गुलछर्रे उड़ा रहा है और इसकी मृत्यु का कारण भी यही होगा।

चित्र को देखकर उसने बताया कि वह व्यक्ति यह है। यह व्यक्ति मेरी कम्पनी का मैनेजर था और उसके सम्बन्ध में स्वप्न में भी मेरी ऐसी धारणा नहीं थी। मैंने आगे न जा कर वहीं निकट एक स्थान पर अपना तम्बू लगवा लिया, जिससे उस योगी से अधिक सम्पर्क स्थापित कर सकूं।

एक दिन उस साधु ने बताया कि तुम अमुक दिन यहाँ से

लौट कर जाओगे, यद्यपि मेरा विचार उस समय तक ऐसा नहीं था। उसने कहा कि जिस कुमारी से तुम्हारा विवाह होने वाला है उसकी माता आगरा के अस्पताल में बीमार पड़ी है। उसकी ऐसी धारणा बन गई है कि वह इस रोग से मुक्त न होगी और शीघ्र मर जायेगी, अतएव वह तुम्हारा विवाह अविलम्ब सम्पन्न कर देना चाहती है। जिस दिन जाने के लिए साधु ने कहा था उससे एक दो दिन पूर्व मेरा मन उचाट खा गया और वहाँ से चलने का निश्चय कर लिया। निर्दिष्ट तिथि पर वहां से चलते समय मैं उस योगी के दर्शनार्थ गया। उसने कहा कि तुम्हारा एक तार निकट के डाकघर में आया हुआ है। तुम्हारी सास ने तुम्हें शीघ्र आने को लिखा है। उसकी गर्दन पर एक फोड़ा है और वह समझी है कि वही उसकी मृत्यु का कारण होगा, किन्तु बात ऐसी नहीं है। तुम पानी में थोड़ा नीबू का रस मिला कर उसे पीने को देना और उसी पानी की पट्टी उसकी गर्दन पर बांधना, वह ठीक हो जावेगी। तुम्हें मेरी फिर आवश्यकता होगी मैं तब तुमसे मिलूंगा। डाकघर जाने पर मुझे वह तार मिला।

आगरा पहुँच कर वही उपचार किया। पहले ही दिन मेरी सास के मन से यह धारणा कि वह रोगमुक्त न होगी, दूर हो गई। और थोड़े ही समय में उसका रोग सर्वथा दूर हो गया। कुछ दिन पश्चात् मेरा विवाह हो गया। हमारे मैनेजर ने कम्पनी के बहुत से धन का दुरुपयोग करने के कारण आत्महत्या करली। इन्हीं दिनों मेरे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। मैं पुनः शिमला गया और वहां पर एक होटल में ठहरा, जहां मेरा पुत्र भीषण रोगग्रस्त हो गया। मैं बड़ी चिन्तित अवस्था में था। होटल के नौकर ने

आकर कहा कि एक साधु आपसे मिलने आया है। बाहर जाकर देखा तो वही योगी खड़ा है। उसने एक घास मुझे दी और कहा कि इसका रस निकाल कर चम्मच से अपने रोगी पुत्र को पिलाओ, वह स्वस्थ हो जावेगा। मैं औषधि लेकर भीतर गया परन्तु इस बीच में वह साधु वहां से चला गया। बनाये हुए ढंग से औषधि देने पर बालक को कुछ खांसी आई और वह कफ निकल जाने पर कष्टमुक्त हो गया।

उपर्युक्त समस्त प्रमाण यह सिद्ध करते हैं कि शरीर से इतर एक अप्राकृतिक चेतनसत्ता है जिसे दार्शनिक परिभाषा में जीवात्मा कहते हैं। यह चेतन सत्ता सब शरीरों में एक है अथवा अनेक? कुछ दार्शनिकों का मत है कि यह सत्ता जो समस्त शरीरों को गति दे रही है, एक ही है। परन्तु पूर्व-जन्म-स्मृति इस विचार का समर्थन नहीं करती, क्योंकि भिन्न भिन्न बालकों को अपने ही पूर्व जन्म की भिन्न २ स्मृतियां होती हैं। यदि एक ही आत्मा को सब शरीरों में मान भी लिया जाय तो सबको सब की पूर्व-स्मृति होनी चाहिये, परन्तु ऐसा नहीं देखा जाता। इससे आत्माओं का अनेकत्व ही सिद्ध होता है, एकत्व नहीं। इस प्रश्न पर आगे हमने कुछ अधिक विवेचन किया है।

आत्म-अस्तित्व स्वीकार करने पर एक दूसरा प्रश्न यह उठता है कि आत्मायें इस जन्म मरण के चक्र में आते ही क्यों हैं? और यदि आते हैं तो इनमें ये विभिन्नतायें क्यों हैं? इस पर हमने आगे के अध्याय में विचार किया है। जीवात्मा इस शरीर के नष्ट होने पर अपने कर्मानुसार दूसरे शरीरों में न केवल मनुष्य अपितु पशु पक्षी, कीट-पतङ्ग तथा वृक्षादि की अनेकानेक योनियों में जाता है और अपने कृतकर्मों का फल भोगता है।

आत्म—अस्तित्व के साथ कर्म एवं भोग वाद के सिद्धान्त को विना माने पुनर्जन्म की पूर्ण एवं युक्ति युक्त व्याख्या नहीं होती। जीव एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में क्यों जाता है तथा श्रेष्ठ अथवा निकृष्ट योनियों को क्यों प्राप्त करता है, इसका समाधान केवल कर्मफल के सिद्धान्त द्वारा ही सम्भव है। अतएव पूर्व-जन्म-स्मृमि, पुनर्जन्म, आत्म-अस्तित्व तथा कर्म और उसका फल ये समस्त एक दूसरे से शृंखला बद्ध हैं और एक की पूरी व्याख्या दूसरे के बिना नहीं की जा सकती।*

---

* पाठक विस्तृत अध्ययन के लिए मनीषीवर्य प० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत जीवात्मा तथा स्वर्गीय महात्मा नारायण स्वामी कृत "आत्म-दर्शन" देखें।

पांचवां अध्याय

कर्म-फल

☆

पुनर्जन्म की भांति कर्म-फल वैदिक धर्म का मुख्य अंग है। वास्तव में कर्मफल के बिना पुनर्जन्म की पूर्ण मीमांसा हो ही नहीं सकती। यही कारण है कि आप 'जैसा करेगा वैसा भरेगा" की लोकोक्ति इस देश के निवासी की जिह्वा पर पायेंगे। अशिक्षित से अशिक्षित ग्रामीण भी इस सिद्धान्त में पुनर्जन्म की तरह पूरी आस्था रखता है। जीवात्मा मृत्यु के पश्चात् दूसरे शरीर में क्यों जाता है? वह इस आवागमन के चक्र में क्यों पड़ा हुआ है? इसकी व्याख्या कर्म विपाक के सिद्धान्त को लेकर ही हो सकती है। जो सम्प्रदाय पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते वे भी इस सिद्धान्त का आश्रय लिए बिना अनेक शङ्काओं का समाधान नहीं कर पाते।

एक बालक धन-सम्पन्न शिक्षित कुल में जन्म लेता है, यहाँ उसे हर प्रकार, पालन-पोषण की समस्त सुविधाएं प्राप्त हैं। दूसरा निर्धन, अशिक्षित परिवार में दीन हीन अवस्था में उत्पन्न होता है जहां उसके भोजन - छादन का भी कोई सहारा नहीं है। कोई बालक स्वस्थ -- सुन्दर उत्पन्न होता है, अन्य कुरूप चक्षु-हीन अथवा विकलाङ्ग अवस्था में। इस भेद का समाधान

केवल कर्मफल द्वारा ही संभव है यदि यह माना जाय कि ऐसा ईश्वर की इच्छानुसार होता है, तो ईश्वर पर अकारण भेद भाव करने अथवा स्वेच्छाचारी होने का दोष आता है। अतः कर्मानुसार ही जीव शरीर धारण करता है और उस शरीर द्वारा पूर्व कर्मों का फल भोगता है। यह शरीर मनुष्य, पशु पक्षी, कीट पतङ्ग, वृक्ष एवं वनस्पति का स्वकर्मानुसार हो सकता है। इनमें भी उत्तम, मध्यम तथा निकृष्ट अवस्थाओं का भेद होता है। जैसा कि पूर्व लिखा जा चुका है, एक बालक उच्च कुल में उत्पन्न होकर शीघ्र उन्नतावस्था को प्राप्त हो जाता है, जबकि दूसरा दीन हीन अवस्था में जीवन यापन करता हुआ अपने समस्त जन्म को बिता देता है। एक बालक अपनी प्रतिभा द्वारा साधारण कुल को आलोकित कर देता है, जबकि दूसरा बालक अपने दुष्कर्मों से उच्च कुल को कलङ्कित करता देखा जाता है। यह कर्मफल -- शृंखला न केवल पूर्वजन्मों पर आधारित है अपितु इस जन्म के कर्म भी इसके कारण हो सकते हैं। यह निश्चय करना कि कौनसा फल किस कर्म का परिणाम है, और वह कर्म इस जन्म का है अथवा पूर्वजन्मों का, कठिन है।

हमारे किए हुए कर्मों का फल ही भोग अथवा प्रारब्ध है और वही हमारे सुख दुख आयु और योनि (मनुष्य-पशु-पक्षी आदि) का हेतु है। आर्य धर्म-शास्त्रों में जीवात्मा मृत्यूपरान्त जिन शरीरों को धारण करता है, उन्हें दो भागों में विभक्त किया गया है। दार्शनिक परिभाषा में इन्हें कर्म योनि तथा भोग योनि कहा गया है। मनुष्य शरीर कर्म तथा भोग योनि दोनों ही हैं, जबकि पशु, पक्षी, कीट, वृक्षादि केवल भोग योनियां हैं—कर्म योनि नहीं। इसका भाव यह है कि मनुष्य जो कर्म करता है वह अपनी बौद्धिक विशेषता के कारण उसका उत्तरदायी है परन्तु

पशु आदि अप...
उत्तरदायित्व से...
कर्मों का फल भ...
करते हैं वे फल...

यह सि...
बन्दीगृह में कर्म...
वह अपने पूर्व...
स्वतन्त्रतापूर्वक...
उत्तरदायित्व है...
सम्बन्ध में है...

कुछ लो...
शरीर में आत्म...
दार्शनिक गौत...
शरीर धारियों प...
पर भी घटते हैं...
इच्छा, द्वेष, प्र...
चिन्ह विद्यमान...
प्रकार कणाद मु...
क्रियाओं का औ...
३-२-४ में आत्म...
भीतर खींचना,...
मीचना, उन्मेष-...
मनोगति-मन के...
के कारण दूसरी...
द्वेष, प्रयत्न ।

कि ऐसा ईश्वर
द् भाव करने
ात: कर्मानुसार
ा पूर्व कर्मों का
ीट पतङ्ग, वृक्ष
ामें भी उद्यम,
। जैसा कि पूर्व
न होकर शीघ्र
ा हीन अवस्था
को बिता देता
को आलोकित
उच्च कुल को
ृंखला न केवल
के कर्म भी इसके
ैसा फल किस
का है अथवा

ाथवा प्रारब्ध है
मनुष्य-पशु-पक्षी
वात्मा मृत्यूपरान्त
में विभक्त किया
तथा भोग योनि
नि दोनों ही है,
योनियां हैं—कर्म
कर्म करता है वह
अपनी बौद्धिक विशेषता के कारण उसका उत्तरदायी है परन्तु

पशु आदि अपनी बुद्धि न्यूनता अथवा हीनता के कारण इस उत्तरदायित्व से मुक्त हैं। केवल अपने पूर्वजन्मों के किए गये कर्मों का फल भोगते हैं। जो कर्म वे अपने जीवनयापन के लिए करते हैं वे फल दाता स्वतन्त्र कर्म नहीं हैं।

यह सिद्धान्त एक उदाहरण से स्पष्ट हो सकता है। बन्दी, बन्दीगृह में कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं, उसके कार्य सीमित हैं, वह अपने पूर्व अपराध का फल मात्र भोगता है। जबकि एक स्वतन्त्रतापूर्वक कर्म भी करता है तथा उसके फल का भी उस पर उत्तरदायित्व है। ठीक यही बात भोग एवं कर्म-योनि के सम्बन्ध में है।

कुछ लोग पशु पक्षी आदि में जीव नहीं मानते परन्तु शरीर में आत्म-अस्तित्व के जो लक्षण इस देश के महान् दार्शनिक गौतम मुनि ने अपने न्याय शास्त्र में दिये हैं, वे इन शरीर धारियों पर ही नहीं अपितु बहुत अंशों में वृक्षादि योनियों पर भी घटते हैं। उन्होंने न्याय दर्शन १-१-१० में आत्मा के चिन्ह इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख तथा ज्ञान बताये हैं। जहां ये चिन्ह विद्यमान हों वहां जीव का अस्तित्व सिद्ध होता है। इसी प्रकार कणाद मुनि ने आत्मा के लिंगों (चिन्हों) में कुछ शारीरिक क्रियाओं का और समावेश कर दिया है। उनके वैशेषिक दर्शन ३-२-४ में आत्मा के निम्न चिन्ह बताये गये हैं—प्राण-सांस को भीतर खींचना, अपान-सांस का बाहर निकालना, निमेष-पलक मीचना, उन्मेष--पलक खोलना; जीवन-शरीर का बढ़ना आदि. मनोगति-मन के व्यापार, इन्द्रियान्तर विकार अर्थात् एक इन्द्रिय के कारण दूसरी इन्द्रिय में विकार हो जाना, सुख-दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न।

हम यदि विचार पूर्वक देखें तो ये सभी चिन्ह इन पशु, पक्षी वृक्षादि योनियों में विद्यमान हैं। हाँ, बुद्धि का न्यूनाधिक्य इनमें देखा जाता है। गाय, बैल, घोड़ा, हाथी, कुत्ता आदि पशु तथा तोता, मैना, कौवा और बया आदि पक्षियों की बुद्धिमता जगत् प्रसिद्ध है। कभी कभी भूचाल, वर्षा आंधी का ज्ञान मनुष्य से पहले इन पशु – पक्षियों को होते देखा जाता है। और वे अपनी रक्षा का पहले से प्रबन्ध कर लेते हैं।

वृक्षादि योनियाँ कुछ विद्वानों में विवाद का विषय है मांसाहारी लोग वनस्पतियों में जीव मानने पर मांसाहार की नैतिकता सिद्ध करते हैं। उधर कुछ शाकाहारी इनमें जीव न मान कर अपने को निर्दोष सिद्ध करते हैं। परन्तु जीव की विद्यमानता के जो लक्षण ऊपर दिये गये हैं वे न्यूनाधिक रूप में सभी वनस्पतियों में घटते हैं। हमारा यह विषय न होने के कारण हम इसका विश्लेषण यहाँ नहीं करेंगे। केवल इतना ही कहेंगे कि आर्य धर्म-शास्त्रों में वनस्पति में आत्म-अस्तित्व स्वीकार किया गया है और भारतीय इसमें सदा से विश्वास करते चले आये हैं। मैडागास्कर द्वीप का नरभक्षी वृक्ष, अमेरिका का मक्खी पकड़ने वाला पौधा जो मक्खियों को अपने फूलों में बन्द करके उन्हें चूसने पर ही छोड़ता है, लाजवन्ती जो छूने या फूंक मारने पर अपनी पत्तियों को सिकोड़ लेती है तथा बानचरल जिसकी पत्तियां ताली बजाने पर नाचने लगती हैं, आदि ऐसे वृक्ष और वनस्पतियां हैं जिनकी विलक्षणतायें देखकर उनमें जीव का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है। आधुनिक विज्ञान भी मनुष्यादि की भांति इनमें चेतना मानता है।

अब प्रश्न मांसाहारियों की इस युक्ति का रह जाता है कि यदि इनमें भी जीव है तो पशु पक्षियों को मारकर खाने में क्या

दोष है ? इसका संक्षिप्त विश्लेषण हम यहां करेंगे। हमें पहले दो बातें समझ लेनी चाहिये। क्या मांसाहार, (जिसमें अंडे खाना भी सम्मिलित है) मनुष्य का स्वाभाविक भोजन है ? क्या अन्न शाकादि के खाने में पशु, पक्षी आदि को मारकर खाने की भांति हिंसा का दोष लगता है ? आज पश्चिम तथा पूर्व के बहुसंख्यक शरीर शास्त्री इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन कदापि नहीं है। उनका मत है कि मांस, मनुष्य शरीर में शराब, भांग, तम्बाकू तथा चाय आदि की भाँति उत्तेजना उत्पन्न करता है जिसे भूल से मनुष्य शक्ति समझ बैठता है। मनुष्य का शारीरिक ढांचा और आन्तरिक बनावट भी यह सिद्ध करते हैं कि वह शाकाहारी है, क्योंकि वे उन गाय, घोड़े, बन्दर आदि पशुओं से अधिक मिलते हैं जिन्हें प्रकृति ने शाकाहारी बनाया है और जो भूल कर भी मांस नहीं खाते। अब बहुत से शारीरिक रोगों का कारण भी केवल मांसाहार ही समझा जाने लगा है। मनुष्य केवल उन्हीं पशु, पक्षियों का मांस खाता है जो शाकाहारी हैं, मांसाहारियों का नहीं। क्योंकि उनका मांस विषैला तथा हानिकर होता है। इससे भी सिद्ध है कि शाकाहार से बना हुआ मांस स्वास्थकर तथा मांसाहार से बना हुआ अस्वास्थकर है।

मांसाहार मनुष्य में जो मानसिक विकार उत्पन्न करता है वह इनसे भिन्न है। वह मनुष्य-स्वभाव में कठोरता, निर्दयता, उत्तेजना आदि हिंसक प्रवृत्ति उत्पन्न करके मनुष्य को हिंसक पशु की कोटि में ला खड़ा करता है। संसार में युद्ध का इतिहास मांसाहार से ही प्रारम्भ होता है और जब तक मनुष्य मांसाहारी है, युद्ध-बन्दी के सभी प्रयास असफल ही रहेंगे।

अब आइये दूसरे प्रश्न पर विचार करें। पहली विचारणीय बात यह है कि अन्न शाकादि मनुष्य का स्वाभाविक

भोजन है और जो जिसका स्वाभाविक भोजन है, उसको ग्रहण करने में हिंसा दोष नहीं है। जिस प्रकार घोड़ा, गाय आदि का स्वाभाविक भोजन घास है उसी प्रकार सिंह, भेड़िया, बिल्ली, कुत्ता, गिद्ध, आदि का मांस होने से वे दोषी नहीं ठहरते। गेहूँ, चावल, जौ, आदि अन्न तो उनके पौधों के सूख जाने अर्थात निर्जीव होने पर ही प्राप्त किया जाता है, अतः इसमें तो हिंसा दोष उत्पन्न ही नहीं होता। यही बात उन फलों और शाकों के सम्बन्ध में है जो वृक्षों, पौधों और लताओं से ग्रहण किये जाते हैं और जिनके तोड़ने पर ये वनस्पतियां निर्जीव नहीं होतीं केवल उन्हें समूल नष्ट करने पर ही हिंसा का दोष आता है, और सम्भवतः यही कारण है कि गाजर, मूली आदि शाकों को बहुत से भारतीय अग्राह्य समझते हैं। सूखे वृक्षों को काटने और हरे वृक्षों को न काटने की भारतीय परम्परा का आधार भी यही प्रतीत होता है।

वृक्षादि वनस्पतियों में चेतना की इतनी न्यूनता है कि वह प्रायः मूर्छितावस्था जैसी होती है। क्लोराफार्म सुंघाने पर जो दशा एक रोगी की होती है, उससे कुछ-कुछ इसकी उपमा दी जा सकती है और जिस प्रकार रोगी चीर फाड़ के कष्ट का उस अवस्था में अनुभव नहीं करता, इसी प्रकार वनस्पतियां भी अपने काटे जाने पर किसी कष्ट का अनुभव नहीं करतीं। अतएव वनस्पति जगत् से भोजन ग्रहण करने में प्रथम तो हिंसा होती ही नहीं है और यदि कुछ होती है तो वह मनुष्य का स्वाभाविक भोजन होने के कारण पाप कोटि में नहीं आती। इस विषय पर प्रसंग वश कुछ अधिक लिख दिया गया है। अतः हम इसे मूल विषय न होने के कारण यहीं छोड़ते हैं।

पाठक इस सम्बन्ध में लिखे गये विस्तृत साहित्य का अव-लोकन करें।

यह मान लेने पर कि इन योनियों में भी हमारे जैसे जीव हैं और आवागमन के सिद्धान्तानुसार हमारा जीव भी इन योनियों में आता जाता रहता है, इस प्राणि जगत् के साथ हमारा कौटुम्बिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। अतः उनको अपने निकृष्ट स्वार्थ अथवा रसास्वादन के लिए मारकर खा जाना अपने पारिवारिक जनों को वध करके खाने के तुल्य जघ-न्यतम पाप बन जाता है। जिस पशु को हम बड़े प्रेम से पालते हैं, उसे ही मारकर खा जाना कितना क्रूर कर्म है। क्या कभी हम अपने कुटुम्बियों के साथ भी ऐसा व्यवहार कर सकते हैं? यदि नहीं तब इन निरीह प्राणियों के साथ ऐसी क्रूरता क्यों? यह एक मार्मिक प्रश्न है कि जिस पर मांसाहारियों को विचार करना है। जो पाप भ्रूण हत्या में है क्या वही पाप अंडों के सेवन में नहीं है? एक बड़े पशु का मांस कई मनुष्यों की तृप्ति कर सकता है परन्तु एक मनुष्य एक समय में कई अंडे खाकर क्या कई प्राणियों की हिंसा का भागी नहीं होता है? अतएव अंडों का सेवन मांसाहार से भी गुरुतर पाप है।

कुछ लोगों का विचार है कि कर्मों का फल ही स्वयं आत्मा को उत्तम और निकृष्ट योनियों में ले जाता है। बौद्ध तथा जैन मत जो ईश्वर जैसी फलदाता शक्ति में विश्वास नहीं करते, ऐसा ही मानते हैं। इन लोगों का विश्वास है कि आत्मा जो भले-बुरे कर्म करता है वहीकर्म संस्कारों में परिणत होकर उसे भली बुरी योनियों में जाने को प्रेरित करते हैं। परन्तु आत्मा यदि कर्मों का कारण है तब यह कैसे सम्भव

है कि चेतन कारण, जड़ कार्य के आधीन होकर कार्य करे। यह नियम है कि जड़,चेतन के आधीन होता है,न कि इसके विपरीत। तब कर्मों का फल स्वयंमेव आत्मा को विभिन्न योनियों में घुमाता फिरे यह बुद्धि ग्राह्य नहीं है।

चोरी स्वयं मनुष्य को वन्दी-गृह में नहीं ले जाती और न चोर स्वेछा से वहां जाता है। वध करने वाला स्वयमेव फांसी पर लटकना नहीं चाहता, जब तक राज्य द्वारा उसे उसके अपराध का दंड न दिया जाय। अतएव कर्मों का फल हमारे आधीन न होकर किसी अन्य शक्ति के आधीन है जो आत्मा से प्रवल है। यदि कर्म फल आत्मा की इच्छा पर आश्रित मान लिया जाय तो कभी कोई जीव निकृष्ट अवस्था अथवा योनि में जाना नहीं चाहेगा। कौन चाहेगा कि वह दरिद्र के यहां उत्पन्न हो? सभी मनुष्य सुखी समृद्ध परिवारों में जन्म लेना चाहेंगे, पशु, पक्षी कीट, पतंगादि योनियों में जाने की वात तो वहुत दूर रह जाती है।

अतएव कर्मफल का सिद्धान्त पुनर्जन्म का एक आवश्यक अंग है जिसको विना माने उसकी बुद्धिगम्य व्याख्या नहीं हो सकती। और इसीलिये भारतीय ऋषियों ने इसे जीवन का एक वांछनीय आधार माना है।*

---

* विस्तृत अध्ययन के लिये स्व० महात्मा नारायणस्वामी कृत 'कर्म रहस्य' तथा श्री पूर्णचन्द्रजी एडवोकेट लिखित 'कर्म-व्यवस्था' ग्रन्थों को देखें।

छठवां अध्याय

ईश्वर—अस्तित्व

★

पिछले अध्याय में जीवात्मा को उसके कर्मानुसार फल देने के लिए अन्य प्रबल शक्ति के अस्तित्व की आवश्यकता पर कुछ चर्चा की गई थी। उसी विषय का कुछ विस्तार के साथ यहां विवेचन किया जाता है।

जैसा कि पूर्व लिखा जा चुका है, न तो जड़ कर्म ही आत्मा को एक शरीर से दूसरे शरीर में ले जा सकते हैं और न आत्मा ही स्वेच्छा से निकृष्ट दशा अथवा योनि में जायेगा। तब यह मानना पड़ेगा कि एक उससे अधिक बलवती शक्ति ही, जो उसके कर्मों की द्रष्टा भी हो, उसे कर्म फल भुगवा सकती है। अतः जिस प्रकार पुनर्जन्म के लिए आत्म-अस्तित्व आवश्यक है उसी भाँति कर्म फल की विवेचना ईश्वर अस्तित्व के अभाव में नहीं हो सकती। ईश्वर-अस्तित्व इस शृंखला की अंतिम कड़ी है जो इसे पूर्णता प्रदान करती है।

जैन तथा बौद्ध सम्प्रदायवादियों का मत है कि कर्म स्वयं फल दे देते हैं। उनकी यह क्लिष्ट-कल्पना है जो युक्तियुक्त नहीं है। आत्म-अस्तित्व के सम्बन्ध में भी इनके संदिग्ध विचार हैं। जिस रूप में आर्य धर्म-शास्त्रों में जीवात्मा को माना गया है

उससे इनका मत भिन्न है। परन्तु उसका नाम-रूप चाहे कुछ हो, एक चेतन सत्ता को इन्हें आवागमन के साथ स्वीकार करना पड़ा है। इसी प्रकार कर्म फल-दाता न सही, परन्तु ईश्वर के अभाव की पूर्ति इन्हें भी तीर्थंकरों और महात्मा बुद्ध को मानकर करनी ही पड़ी है।

क्या कर्म स्वयं फल देता है? क्या आत्मा स्वेच्छा से एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में जाता है? यह दो प्रश्न हैं जिन पर प्रसंग वश पीछे कुछ लिखा जा चुका है। परन्तु इन्हें अधिक स्पष्ट करने के लिये यहां थोड़ा विस्तार के साथ पुनः विचार करते हैं। कर्म जड़ होने के कारण यद्यपि फल नहीं दे सकते परन्तु थोड़ी देर के लिए हम माने लेते हैं कि कर्म ही स्वयं फलदाता हैं और शुभ कर्मों का फल शुभ और अशुभ का अशुभ देते हैं। परन्तु प्रायः ऐसा भी देखा जाता है कि कर्म जिस उद्देश्य से किया जाता है फल उसके विपरीत होता है। हम गृह निर्माण सुरक्षार्थ करते हैं, परन्तु भूचाल का एक झटका उसे धराशायी कर देता है और न केवल हम अपितु हमारा समस्त परिवार उसमें दबकर नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार बहुत से लोग अभीष्ट कामनाओं की सिद्धि के लिये अनेक कर्म करते हैं परन्तु कभी कभी उनसे उनका अनिष्ट होते देखा जाता है। पूरा पुरुषार्थ करने पर भी लोग असफल होते हैं और कभी बिना पुरुषार्थ अनायास ही कार्य सिद्ध हो जाता है। पुण्यात्मा दुःखी और पापात्मा सुखी, ऐसा भी देखने में आता है। तब कर्म फल दाता नहीं ठहरते। यदि कर्म ही फल दाता है तो ये विपरीत फल क्यों? कहा जा सकता है कि यह पूर्व कर्मों का फल है। जैन और बौद्ध लोग तो इन्हें पूर्व जन्मों का फल कह कर कुछ समय के लिये छुटकारा पा सकते हैं, परन्तु भौतिकवादियों के पास, जिनका

पुनर्जन्म में विश्वास नहीं है, इसका कोई उत्तर नहीं है। जैन और बौद्धों के समक्ष भी इस उत्तर से एक अन्य उलझन उत्पन्न हो जाती है कि कर्म पूर्वजन्म में किसी शरीर ने किया और फल इस जन्म में कोई दूसरा शरीर भोगे। क्योंकि भौतिक शरीर जिसने वह कर्म किया है, यहीं नष्ट हो जाता है। यदि कहो कि मन जाता है तो मन भी शरीर का एक विकार होने के कारण भौतिक ही है। वह भी शरीर तथा आत्मा की अनुपस्थिति में क्रिया हीन जड़वत् है। यदि कहो कि वह चेतन है तो केवल नाम नाम का भेद हुआ। जिसे तुम चेतन कहते हो, हम उसे ही आत्मा कहते हैं, परन्तु वह जिस पंचतत्व से शरीर बना है, उसका विकार नहीं हो सकता। अन्यथा शरीर के साथ उसका भी नाश अवश्यम्भावी है।

अब आत्मा के स्वेच्छा से एक मृत शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में जाने की बात लीजिये। यदि आत्मा स्वेच्छा से एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में जाने के लिये स्वतंत्र होता तो वह कभी निम्न कोटि के शरीरों में न जाता। सदा श्रेष्ठ मनुष्य शरीरों में ही रहता और इस प्रकार पशु-पक्षियों आदि निम्न योनियों का संसार में अभाव हो जाता। परन्तु ऐसा हम नहीं देखते। इन योनियों में प्राणियों की गणना मनुष्यों से असंख्य गुनी अधिक है। उससे सिद्ध है कि जीवात्मा अपने कर्मानुसार किसी दूसरी शक्ति के आधीन होकर इन सभी योनियों में घूमता है।

व्यावहारिक रूप में भी यह देखा जाता है कि जघन्य से जघन्य पाप करने वाला मनुष्य भी स्वेच्छा से दंडित होना नहीं चाहता और जिस प्रकार समाज में व्यवस्था रखने तथा अपराधियों को दंड देने के लिए एक राजकीय शक्ति की आवश्यकता

है, ठीक उसी भाँति आत्मा को उसके कर्मों का फल भुगवाने के लिये ईश्वर की आवश्यकता है। परन्तु यह ईश्वर, ईश्वर हो, अर्थात् सर्वद्रष्टा, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान, पक्षपात रहित और न्यायकर्त्ता हो। मतवादियों का सा एक देशीय, शक्तिहीन तथा पक्षपात युक्त न हो। न वह गोलोक, कैलाश, स्वर्ग अथवा जन्नत में निवास करता हो और न उसे अपने कार्य के लिये किसी देवता, दूत अथवा फरिश्ते की सहायता की आवश्यकता हो। जो न किसी सम्प्रदाय विशेष के अनुयायी को मोक्ष, स्वर्ग अथवा बहिश्त देता हो और न अन्यों को नरक तथा दोजख। प्रतीत ऐसा होता है कि ईश्वर के स्वरूप को न समझ कर ही लोगों ने उसे कर्मफल दाता पद से च्युत कर दिया है। यदि ईश्वर और आत्मा के स्वरूप को ठीक प्रकार समझ लिया जाता तो कदाचित् ऐसी भूल न होती। ईश्वर, आत्मा से सूक्ष्मतर होने के कारण उसमें व्यापक है और वह हमारे सभी कर्मों का द्रष्टा है चाहे वे शारीरिक हों चाहे मानसिक। उसे किसी चित्रगुप्त (लेखा रखने वाले) की आवश्यकता नहीं है और सर्वशक्तिमान् होने के कारण उसे यमराज, यमदूतों अथवा फरिश्तों की सहायता भी अवांछनीय है। वह पक्षपात रहित है, किसी के अनुरोध पर पाप क्षमा नहीं करता अपितु शुभाशुभ कर्मों का न्याययुक्त उचित फल देता है।

हमने ऊपर ईश्वर के जिस स्वरूप का वर्णन किया है, ऐसे ईश्वर का औचित्य आज के बहुत से वैज्ञानिक अब अनुभव करने लगे हैं। यद्यपि बाइबिल के तथाकथित ईश्वर को वे अब भी कोई मान्यता नहीं देते। विज्ञान का कार्य क्षेत्र भौतिक जगत् और उसकी रचना है। वे अब यह मानते हैं कि बिना किसी चेतन सत्ता के इस जगत् की रचना और उसका नियमित संचालन केवल भौतिक तत्वों के आधार पर असम्भव है। उनको अब

विश्वास हो गया है कि विज्ञान ईश्वर विरोधी नहीं हैं। योरुप के इस समय के सात प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने 'साइन्स एन्ड रिलीजन' (विज्ञान और धर्म) पुस्तक में एक स्थान पर लिखा है:—
"मैं बतलाना चाहता हूं कि हेकल की (नास्तिक-विकासवाद की) विचार धारा एक बहुत पुरानी और दाकियानूसी भौतिक विचार धारा है, और वह वर्तमान युग से सर्वथा दूर है।" (पृष्ठ ६३) इसी पुस्तक में आगे पुनः लिखा है।

"प्रकृति सम्बन्धी जितनी विचार पद्धतियां गत वीस वर्षों में प्रकट की गई हैं, उन सबका आधार आध्यात्मिक तत्व है। और यह ही नवीन विज्ञान है।" इसी पुस्तक में पृष्ठ ४८ पर इन्होंने निम्न विचार प्रकट किए हैं।

"वैज्ञानिक अनुशीलन निश्चित रूप से हम पर यह प्रकट करता है कि इस भौतिक संसार में क्रम और स्थिरता के अतिरिक्त एक नियामक और प्रेरक शक्ति है, जिसे हम अनुभव कर सकते हैं। यह गुण स्वतः पैदा नहीं हो गये और न अचानक ही निकल आये हैं। वे केवल किसी आकस्मिक घटना का परिणाम भी नहीं हैं। ये विचार तथा चेतना के द्योतक हैं। यह संसार जड़ वस्तु मात्र ही नहीं है प्रत्युत् विचारमय भी है। और विचार विचारक के अस्तित्व को प्रकट करते हैं। अतः इस संसार में एक उच्च कोटि का विचारक है जिसके विचारों के समक्ष हमारे अपने विचार उसका एक अस्पष्ट प्रतिबिम्ब हैं।"

इसी प्रकार एक अन्य विद्वान का मत है:—

"चैतन्य के विना जड़ पदार्थों में चेतना आ ही नहीं सकती। विज्ञान का यह नियम मुझे पृथ्वी के आकर्षण की भांति अटल प्रतीत होता है।"

—दी नेचर एण्ड ओरीजन आफ लाइफ पृष्ठ १७३

डा० मालकैरस ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ दी रिलीजन आफ साइन्स में लिखा है :—

"यद्यपि विज्ञान विशेष रूप से ईश्वर का प्रतिपादन नहीं करता, तो भी वह ईश्वर के विषय में हमें शिक्षा देता है, क्योंकि प्रकृति का प्रत्येक नियम ईश्वर का एक अंग और उसका सूचक है......" "विज्ञान धर्म नास्तिक नहीं अपितु आस्तिक है........" परमेश्वर ही है जो कि प्रकृति के स्वरूप का निर्णय करता तथा प्रकृति-शक्ति को प्रेरित करता है।"

सन् १९३३ में रिलीजन आफ साइन्टिस्ट्स नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसके सम्पादक डरा विज एम० ए० हैं। उसमें रायल सोसायटी आफ लंदन के दो सौ सदस्यों, अर्थात् वर्तमान काल के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के धर्म विषयक विचारों का संग्रह है, जो कि उन्होंने धार्मिक प्रश्नों के उत्तर रूप में दिये थे। इसके पढ़ने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि वर्तमान वैज्ञानिकों की अधिक संख्या ईश्वर की सत्ता में अब विश्वास रखने लगी है। हां, ईसाइयों व अन्य मतावलम्बियों के साकारवाद में उनका कोई विश्वास नहीं है।

इन विद्वानों से क्रिश्चियन एवीडेन्स सोसाइटी की ओर से निम्न लिखित प्रश्न किया गया :—

"क्या आपके विचार में विज्ञान ईसा मसीह द्वारा प्रतिपादित ईश्वरवाद का खण्डन करता है?" इसका उत्तर मि० सी० एस० मिडलमिस एफ० आर० एस, सी० आई० ई० ने यह दिया:— "हां ऐसे ईश्वर की मनुष्यवत् कल्पना बालकों के समान है जो कभी मान्य नहीं हो सकती।" इसी प्रश्न का उत्तर प्रो० जे० बी० काहन

एफ० आर० एस० डी० एस० सी०, एल० एल० डी० एस० सी० एस० ने यह दिया है :—

"मैं समझता हूं कि विज्ञान ईसा मसीह की ईश्वर विषयक कल्पना का जो मानव गुणों से युक्त उसे बतलाती है, खण्डन करता है।"

ये कुछ उद्धरण यहां इस लिये दिये गये हैं कि पश्चिमी शिक्षा-दीक्षा से प्रभावित भारतियों का यह भ्रम कि आज का विज्ञान ईश्वर विरोधी है, इन्हें पढ़कर दूर हो जावे। वास्तविकता यह है कि वैज्ञानिकों ने जब भी और जहां भी, ईश्वर का विरोध किया, उनके मस्तिष्क में एक साम्प्रदायिक ईश्वर की प्रतिमूर्ति थी उस ईश्वर की नहीं जिसकी ओर हमने ऊपर सङ्केत किया है। अर्थात् जो निराकर, निर्विकार, जीवन मरण के बन्धन से मुक्त सर्वव्यापक, सर्वज्ञाता तथा सृष्टि—कर्ता है और जिसका विस्तृत निरूपण भारतीय वैदिक साहित्य में किया गया है। अतएव स्पष्ट है कि ईश्वर का अस्तित्व न केवल पूर्व-जन्म-स्मृति अपितु वैज्ञानिक आधार पर भी सुप्रमाणित है।*

---

* प्रसिद्ध दार्शनिक श्री प० गङ्गा प्रसाद उपाध्याय ने अपने 'आस्तिक-वाद' में ईश्वर अस्तित्व पर अत्यन्त सुन्दर विवेचन किया है। "धर्म और उसकी आवश्यकता' श्री ज्ञानानन्द जी कृत दूसरी पुस्तक है जिसमें इस विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। विशेष अध्ययन के लिए पाठक इन पुस्तकों का अवलोकन अवश्य करें।

सातवां अध्याय

अविशिष्ट-विचार

★

हमने इस छोटी सी पुस्तक में पूर्वजन्म स्मृति के आधार पर कुछ आध्यात्मिक विषयों की विवेचना की है। आवश्यकता पड़ने पर स्पष्टीकरणार्थ कहीं कहीं कुछ युक्ति प्रमाण भी दिये हैं। इन विषयों पर अनेक विद्वानों ने सविस्तार विवेचन किया है। जो पाठक उन पर सूक्ष्म दार्शनिक दृष्टि से विचार करना चाहें, वे उन ग्रन्थों का जिनकी सूची हमने प्रारम्भ में दी है अथवा टिप्पणियों में यथा स्थान सङ्केत किया है, अवश्य अध्ययन करें, ऐसा हमारा साग्रह अनुरोध है। ग्रन्थ विस्तारभय तथा ऐसे विद्वानों के गम्भीर दार्शनिक विवेचन की उपस्थिति में उन पर कुछ लिखना न उचित था और न आवश्यक। परन्तु हमारे प्रतिपादित विषय से सम्बन्धित कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन पर यदि यहां विचार न किया जाय तो अनेक पाठकों को कुछ शंकाएँ बनी रह सकती हैं। अतएव हमने संक्षेप में उन पर यहाँ विचार किया है।

१—जीव को एक शरीर छोड़कर दूसरे में आने में कितना समय लगता है तथा वह गर्भ में किस समय आता है ?

मृत्यूपरान्त आत्मा को एक शरीर से निकल कर दूसरे

शरीर तक पहुँचने में कितना समय लगता है, यह एक प्रश्न है। लोग इस समय की गणना भिन्न भिन्न रूप में करते हैं। पौराणिक हिन्दू इस समय को १३ दिन मानते हैं। परन्तु प्राचीन ऋषियों का दृष्टिकोण यह है कि आत्मा एक शरीर को छोड़कर तुरन्त दूसरे शरीर (गर्भ) में चला जाता है और शरीर छोड़ने से पूर्व ही कर्मानुसार उसका दूसरा शरीर निश्चित हो जाता है।

उपनिषद्कारों ने इसकी उपमा उस कीट से दी है जो अपने पिछले पैर एक तृण से उस समय उठाता है जब आगे के पैर दूसरे तृण पर जमा लेता है।* भाव यह है कि समय इतना न्यून होता है कि उसका माप नहीं हो सकता।

कुछ लोग गर्भ-स्थापन के समय जीव का न आना मान कर कुछ मास पश्चात् मानते हैं। परन्तु उपनिषद्कारों का ऐसा मत नहीं है। वे जीव का गर्भाधान के समय आना ही मानते हैं।+ आयुर्वेद का भी यही सिद्धान्त है। गर्भ वृद्धि चेतन सत्ता के अभाव में सम्भव भी नहीं है प्राचीन तथा अर्वाचीन शरीर शास्त्री भी ऐसा ही मानते हैं। संसार में वस्तुओं के बढ़ने के दो प्रकार हैं एक बाहर से जैसे पत्थर, लोहा, सोना, आदि। दूसरे भीतर से, जैसे वृक्ष, पशु मनुष्यादि के शरीर। इस भेद का कारण उनमें जीव का होना न होना है। जिनमें जीव नहीं होता उनकी वृद्धि बाहर से होती है, और जिनमें जीव होता है उनकी वृद्धि भीतर से होती है। गर्भ की वृद्धि भीतर से होती है। इससे उसमें जीव का अस्तित्व सिद्ध होता है। माता अपने भोजन के रस से गर्भ का उतना ही पोषण करती है जितना उत्पन्न हुये शिशु का अपने दुग्ध से, अतएव माता को ही गर्भ वृद्धि का

---

* बृहदारण्यकोपनिषद्, ४ अ० ४, ३। + ऐतरेयोपनिषद् खंड ४।

एक मात्र कारण मानना भ्रम है । अंडा, जो गर्भ का एक बाह्य रूप है, की वृद्धि इसका एक अच्छा उदाहरण है। इस सिद्धान्त पर कुछ पूर्वजन्म-स्मृति घटनाएं, जिनमें मृत्यु के तुरन्त अथवा दो, चार मास पश्चात् जन्म हुआ है, आपत्ति प्रस्तुत करती हैं। उनका समाधान इस प्रकार किया जा सकता है कि कभी २ मृत्यु समय जीव की किन्हीं प्रबल इच्छाओं एवं संस्कारों के कारण एक गर्भ का जीव दूसरे गर्भ में उसी भांति परिवर्तित हो जाता है जैसा कि हम दो अब्राहीमों की जीवितावस्था में आत्म परिवर्तन को देखते हैं। गर्भ में जीव परिवर्तन का एक अन्य कारण भी हो सकता है। मान लीजिये कि एक जीव को स्वकर्मानुसार मनुष्य योनि में केवल कुछ मास, दिन अथवा क्षण ही रहना है, अतएव वह उतने ही समय गर्भ में स्थिर रहता है और अवधि समाप्त होने पर दूसरी योनियों में चला जाता है। वह गर्भ जिसे उसने छोड़ा है या तो नष्ट होजाता है अथवा दूसरा जीव जिसे अपने कर्मानुसार गर्भ के कष्टों को अधिक समय नहीं भोगना है, वहाँ आजाता है। इस प्रकार एक जीव के गर्भ में रहने का समय सामान्यतः ८-१० मास से न्यूनाधिक दोनों हो सकता है। फिर भी ऐसी घटनाएं अधिक विश्लेषण चाहती हैं।

प्रायः सर्वसाधारण में ऐसी दन्तकथाएं प्रचलित हैं कि अमुक व्यक्ति मरकर पुनर्जीवित होगया और उसके स्थान पर दूसरा व्यक्ति मर गया। मृत्यूपरान्त उसे एक लम्बी दाढ़ी वाले आदमी के सन्मुख लेजाया गया परन्तु उसने कहा कि यह वह व्यक्ति नहीं है, लौटा लेजाओ और उसी नाम का दूसरा व्यक्ति मर गया और वह मृत मनुष्य जीवित होगया। इन कथाओं में कितना सत्य है, इसका अनुसंधान करने का तो कभी कोई अवसर नहीं मिला, परन्तु यदि इनमें कोई सत्य है तो ये केवल अपनी ही

कल्पनाओं का परिणाम है। मरकर लौटना जिसे लोग समझते हैं वास्तव में ऐसे लोग मरते नहीं हैं अपितु उनकी मूर्छितावस्था ही होती है, जिसे लोग नाड़ी--ज्ञान न होने के कारण मृत समझ बैठते हैं। ऐसे मरकर लौटने वाले मनुष्य जिस जिस समुदाय के होते हैं, मरने के पश्चात् जैसी जैसी कल्पनाएं उनकी होती हैं, वैसा ही स्वप्नवत् उनको दिखाई पड़ना सम्भव है। परन्तु है यह सब कुछ आभास मात्र ही, वास्तविक नहीं। जो इनमें विश्वास नहीं करते, अथवा शिक्षित हैं वे ऐसी बातें कभी देखते अथवा कहते नहीं सुने जाते।

२—स्वर्ग--नरक

ईसाई, मुसलमानों की भांति पौराणिक हिन्दू सम्प्रदाय भी स्वर्ग--नरक स्थान विशेष में विश्वास रखते हैं। इनके मान्य ग्रन्थों में जहां स्वर्ग में प्राप्त होने वाले अलौकिक सुखों का चित्रण किया गया है; वहां नरक में अनेकानेक वीभत्स यन्त्रणाओं का उल्लेख है। परन्तु आवागमन एवं कर्मफल सिद्धान्त के आधार पर इन स्थानों की आवश्यकता ही नहीं रहती। जिन शुभाशुभ कर्मों द्वारा प्राप्त होने वाले भोगों का इन स्वर्ग-नरक में वर्णन किया गया है, वे सभी आत्मा को जन्म-जन्मान्तरों में शरीर धारण करने पर विविध योनियों में यहीं प्राप्त होजाते हैं। यदि हम स्वर्ग लोक और नरक अथवा यम लोक के अर्थों पर विचार करें तो भी यही स्पष्ट होता है कि यह लोक हमारे शरीर ही हैं जो आत्मा को स्वकर्मानुसार प्राप्त होते रहते हैं। 'स्वर्ग' का अर्थ सुख और 'नरक' का अर्थ दुख तथा 'लोक' का अर्थ शरीर, सर्वमान्य है। ऐसी अवस्था में श्रेष्ठ शरीर, अथवा योनि स्वर्ग तथा निकृष्ट शरीर अथवा योनि नरक है, जो जीव स्वकर्मानुसार प्राप्त करता

रहता है। यदि स्वर्ग, नरक स्थान विशेष में जीव का जाना मान लिया जाय तो यह पुनर्जन्म किसका होता है? दोनों सिद्धान्त साथ साथ चल नहीं सकते। हमने जितनी भी पूर्वजन्म-स्मृति की घटनाएं दी हैं उनमें किसी भी बालक ने स्वर्ग-नरक में जाने आने का कोई वर्णन नहीं किया है। जो सम्प्रदाय आवागमन में विश्वास नहीं करते, उनके लिये तो स्वर्ग--नरक कोई अर्थ रखता है. परन्तु जो आवागमन को मानते हैं उनके लिये स्वर्ग-नरक की बात ही हास्यास्पद है।

३—मृतक श्राद्ध-तर्पण

पुनर्जन्म सिद्धान्त के साथ मृतकों के लिये पिण्डदान, श्राद्ध-तर्पण भी एक अर्थहीन क्रिया-कलाप है। जब जीव ने दूसरा जन्म ले लिया तब पिण्ड-दान, श्राद्ध तर्पण क्यों और किसके लिये? जब तक आत्मा और शरीर का संयोग है उसी समय तक हमारे एक दूसरे से सांसारिक सम्बन्ध हैं। जीव और शरीर के वियोग पर यह समस्त सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं। जो आज हमारा पुत्र है पूर्वजन्म में हमारा पिता हो सकता है। इसी प्रकार स्वयं पिता अपना ही पुत्र बन सकता है। ऐसे दोनों ही उदाहरण इस पुस्तक में संग्रहीत पूर्वजन्म स्मृति की घटनाओं में मिलते हैं। ऐसी अवस्था में, मृतक के नाम पर किए गए समस्त कृत्य निरर्थक हो जाते हैं। हम देखते हैं कि पुनर्जन्म होने पर पितरों के नाम पर दी गई सामग्री भी हम तक नहीं पहुंचती। क्योंकि हम भी तो किसी के पितर होंगे ही।

पुराणों का मत है कि बिना एकादश पिण्ड-दान किये जीव का दूसरे जन्म में शरीर नहीं बनता और वह प्रेत योनि में बिना शरीर धारण किये भटकता रहता है। परन्तु मुसलमान और

ईसाइयों का पुनर्जन्म यह सिद्ध करता है कि उनका ऐसा मत निराधार और असत्य है। ईसाई और मुसलमान पिण्ड-दान नहीं करते, तब उनका शरीर दूसरे जन्म में कैसे बना ? कुछ लोगों का कथन है कि पितरों का श्राद्ध-तर्पण उनकी स्मृति में किया जाता है। उन्हें भोजन, वस्त्र पहुँचाने के लिये नहीं। परन्तु यह बात, इस सिद्धान्त के आधारभूत ग्रन्थ गरुड़ पुराण के मन्तव्य के विपरीत है। उसके मतानुसार श्राद्ध में पितरों के नाम पर दिया गया भोजन-वस्त्र उन्हें न केवल परलोक में पहुँचता है अपितु वे स्वयं अपने पुत्र-पौत्रों के गृहों में आकर उसे ग्रहण करते हैं। अतएव स्वर्ग-नरक की भांति मृतक श्राद्ध-तर्पण का भी आवागमन के सिद्धांत के साथ कोई सामञ्जस्य नहीं है। पूर्वजन्म स्मृति की घटनाएं, जैसा कि पूर्व लिखा जा चुका है, इसका स्पष्ट खण्डन करती हैं। किसी बालक का स्वर्ग-नरक के अस्तित्व की तरह परलोक में अपने पुत्र-पौत्रों द्वारा दिये गये किसी पदार्थ के पहुँचने का उल्लेख न करना भी यही सिद्ध करता है।

४—भूत-प्रेत

बहुत से लोग भूत-प्रेत की भी योनि विशेष मानते हैं। परन्तु बात ऐसी नहीं है। प्रेत का अर्थ मृत शरीर अथवा शव है। अतएव जब तक मनुष्य का शरीर भस्म नहीं कर दिया जाता, उसे प्रेत नाम से पुकारते हैं और उस समय तक उसकी संज्ञा प्रेत ही रहती है। जब उसे भस्म कर दिया जाता है तब उसकी संज्ञा 'भूत' हो जाती है। अर्थात् शरीर के अभाव में उसे व्यतीत हुआ समझा जाता है, क्योंकि वर्तमान में अब उसकी सत्ता अवशेष नहीं रही। यही भूत, प्रेत हैं, अन्य कोई प्राणी विशेष नहीं हैं जो बिना किसी भौतिक शरीर के आकाश में घूमते रहते हैं। भूत-प्रेत का भ्रमजाल

खाने कमाने के लिये सयाने और ओझाओं द्वारा लोगों को ठगने के लिये फैलाया हुआ है। इसमें कुछ स्वार्थ उन लोगों का भी निहित होता है जो अपने सम्बन्धियों को भयभीत करके इसे सत्य सिद्ध करने का षडयन्त्र रचते हैं। मध्यकालीन युग में, इस देश में भूत-प्रेत की बड़ी चर्चा थी किन्तु अब शिक्षा-प्रसार के साथ, पिछड़े हुए वर्ग और जातियों के अतिरिक्त इनमें कोई विश्वास नहीं करता।

५—आत्माओं को बुलाना

स कि पूर्व में सङ्केत किया जा चुका है, माध्यम, प्लानचिट यंत्र तथा मेज को हिलाने आदि प्रक्रियाओं द्वारा मृतकों की आत्माओं को बुलाने का कार्य भी सम्मोहन आदि क्रियाओं का ही परिणाम है, जिसका कारण कोई बाह्य न होकर, अपनी ही मानसिक शक्तियाँ हैं।

एक बार मेरे एक युवा मित्र की पत्नी का देहावसान हो गया। उन्होंने आत्माओं को बुलाने का कुछ साहित्य मंगाया और मेज हिलाने का अभ्यास किया। मुझे भी उन्होंने यह चमत्कार दिखाया। मैंने अपने स्वर्गीय पिता की आत्मा को बुलाकर कुछ प्रश्न किये। उत्तर प्रायः ठीक थे। मैंने दो तीन दिन के विचार के पश्चात् एक दिन बिना किसी पूर्ण अभ्यास के उस मेज को हिलाया और एक प्रश्न किया। मैंने एक वृक्ष के कुछ पत्ते अपनी जेब में रक्खे हुए थे। मेरा प्रश्न बुलाई हुई आत्मा से यह था कि मेरी जेब में कितने पत्ते हैं? उत्तर में मेज बार बार हिलती थी और रुक जाती थी। कारण यह था कि ये पत्ते मेरे गिने हुए नहीं थे और उनकी संख्या का मुझे ज्ञान नहीं था इसीलिए उत्तर अनिश्चित आ रहा था। इससे सिद्ध है कि यह अपनी ही मानसिक शक्ति का प्रदर्शन था, किसी बाह्य आत्मा

का नहीं ।

मेरे एक सम्बन्धी ने आत्माओं को बुलाने के भारतीय विशेषज्ञ श्री वी० डी० ऋषि के सम्बन्ध में एक कथा सुनाई। श्री वी० डी० ऋषि, जिन्हों ने इस विषय पर बहुत सा साहित्य लिखा है, अपने चमत्कारों को दिखाने के लिए पहले प्रायः बम्बई से देहली आते रहते थे। एक बार उक्त सज्जन ने, जो देहली में एक कालेज के प्रोफेसर थे, श्री वी० डी० ऋषि से अपने नाम की आत्मा को बुलाने को कहा। प्रो० महोदय ने श्री ऋषि पर अपना नाम प्रकट नहीं किया था। उस आत्मा को बुलाया गया और वह आगई। इस पर उक्त प्रोफेसर ने कहा कि श्रीमान् जी ! वह आत्मा तो मेरे शरीर में विद्यमान है और मैं आपके समक्ष बैठा हुआ हूँ, तब आपने उसे कैसे और कहां से बुला लिया ? इस पर ऋषि महोदय अत्यन्त लज्जित हुए और निरुत्तर होकर मौन धारण कर लिया।

स्वप्न अथवा जाग्रतावस्था में किसी भावी घटना का आभास भी 'परिचित्त ज्ञान' द्वारा होजाता है, परन्तु वह भी अपनी ही अन्तः प्रेरणा का परिणाम है, कोई बाह्य नहीं। जिस प्रकार सम्मोहन क्रिया द्वारा जाग्रत अवस्था में अपने विचार दूसरों तक पहुंचाये जाते हैं, उसी भांति स्वप्नावस्था में एक आत्मा अपने विचार दूसरी आत्मा तक पहुँचाती है। इसका कोई बाह्य कारण मानने की भूल प्रायः लोग अपनी आत्म शक्ति को न समझने के कारण कर बैठते हैं। अतः आत्मा को बुलाना अथवा स्वप्नाभास जो कभी कभी सत्य सिद्ध होते हैं, अपनी ही मानसिक अथवा आत्मिक शक्ति का परिणाम है किसी बाह्य शक्ति का चमत्कार नहीं।*

---

*विस्तृत विवेचन म०नारायणस्वामी कृत 'मृत्यु और परलोक' में देखें।

६—पुनर्जन्म और मनुष्य आकृति

पूर्वजन्म स्मृति की जो घटनाएं हमने संग्रह की हैं, उनमें कुछ से यह सिद्ध होता है कि दूसरे जन्म में जीव न केवल अपने पिछले जन्म के संस्कार ही ले जाता है अपितु कभी कभी मुखाकृति भी उसके साथ जाती है। एक घटना में लड़की की आकृति ठीक पूर्वजन्म जैसी थी। इसी भांति एक अन्य घटना में दोनों भाई अंग्रेजों जैसी आकृति रखते थे, जबकि उनके माता पिता श्याम वर्ण थे। एक तीसरी घटना में पुत्र की आकृति बिलकुल पिता जैसी थी, जिसकी आत्मा कि पुत्र में आई थी। इब्राहीम चारको और इब्राहीम डरहम की आत्मायें बदलने पर उनकी शारीरिक आकृति में भी परिवर्तन होगया। उपर्युक्त प्रमाण इसके साक्षी हैं कि कभी कभी एक शरीर के रंग-रूप के संस्कार भी दूसरे जन्म में जीव के साथ जाते हैं।

बहुत से लोगों की मुखाकृति अथवा आंख, नाक अनेक पशु-पक्षियों से मिलती जुलती हैं। कदाचित इसी आधार पर आकृति विज्ञान जानने वाले मुखाकृति देखकर मनुष्य-स्वभाव की बहुत सी बातें जान लेते हैं। बहुत से लोगों की आँखें किन्हीं पशु विशेष से मिलती हैं; जिनको देखकर उन पशु-पक्षियों के स्वभाव के अनुरूप उनके स्वभाव की कल्पना की जा सकती है। आत्मा जिन जिन योनियों में होकर आता है, उन योनियों की यदि कुछ आकृति के संस्कार लावे तो यह अस्वाभाविक नहीं है। इसी प्रकार पशु-पक्षियों के सौन्दर्य, कुरूपता अथवा भयानकता तथा कंठ का सुरीलापन और चाल-ढाल देखकर उनके पूर्वजन्म के संस्कारों का कुछ कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। सुन्दर गाय, घोड़े, हरिण आदि पशु गतजन्म में इसी स्वभाव के मनुष्य हो सकते हैं। कुरूप पशु पक्षी तथा सिंहादि के, भयानक

हिंसक स्वभाव वाले मनुष्यों के शरीरों में से आई हुई आत्माएं होने का अनुमान लगाया जा सकता है ।

एक पश्चिमी विद्वान् इरैस्मस ने लिखा है कि "राजाओं की चाल ढाल बिल्कुल उक़ाब और शेर की तरह होती हैं । राजाओं की इन पशुओं से उपमा देना बहुत ठीक है और उनकी आत्माओं में बहुत कुछ सादृश्य अवश्य होता होगा ।'

इसी भांति सुन्दर रङ्ग-बिरङ्गी चिड़ियाओं तथा उनके सुरीले कंठ से अनुमान किया जा सकता है कि वे पिछले जन्म में सौन्दर्य प्रिय, मधुर कंठ गायक व गायिका हो सकती हैं । प्रायः लोग कुटिल चाल वाले को साँप, मक्कार को लोमड़ी, निष्कपट को गाय, निर्दयी को भेड़िया और मूर्ख की गधे से उपमा दिया करते हैं ।

७--जीव का अनेकत्व

शरीर में अभौतिक आत्म-अस्तित्व मान लेने पर एक अन्य प्रश्न उठता है कि यह चेतन सत्ता सब शरीरों में एक है अथवा अनेक ? यह एक दार्शनिक गुत्थी है जिसे सुलझाना आवश्यक है । पूर्वजन्म स्मृति की घटनाएं आत्माओं का अनेकत्व सिद्ध करती हैं । यदि सब शरीरों में एक ही आत्मा होती तो सब बालकों को सबकी पूर्वजन्म स्मृति रहती, किन्तु ऐसा नहीं है । समस्त प्राणी जगत में एक आत्म तत्व स्वीकार करने पर बालकों में जन्म से विषमता का भी कोई उचित समाधान सम्भव नहीं है । एक आत्मा का विभिन्न पशु-पक्षियों की योनि में आना जाना क्यों होता है ? इसका भी कोई युक्ति युक्त उत्तर नहीं है । यदि कहा जाय कि कर्मानुसार, तो एक ही समय में एक ही आत्मा के यह विभिन्न कर्म क्यों ? यदि कालान्तर के कारण विभिन्नता मानी जाय तब भी कर्मानुसार इस विषमता के आदि कारण को तो बताना ही होगा । अतः समस्त शरीरों में एकात्मा

मानने पर आवागमन की गुत्थी उलझती ही है; सुलझती नहीं। इस सिद्धांत को मानने पर कुछ और आपत्तियां हैं जिनका कोई समाधान नहीं। यदि प्राणी मात्र में एकात्मा मान ली जाय, तो सबका सबको ज्ञान होना चाहिये। सबका सबको ज्ञान होने पर विशेषतः ज्ञान सम्पन्न मनुष्य की जो अवस्था होगी उसमें और एक उन्मत्त व्यक्ति में कोई अन्तर न होगा। असंख्य आत्माओं के विचार और कल्पनाएं एक मस्तिष्क में एकत्रित होने पर उसकी जो दशा होगी उसका अनुमान लगाना भी कठिन है। कल्पना कीजिये कि एक चोर के मन में चोरी करने का विचार उत्पन्न हुआ, साहूकार को तुरन्त उसका ज्ञान होगया। इसी प्रकार पुलिस तथा समस्त राज्य कर्मचारी भी उससे अवगत हो गये। क्योंकि सब में एक ही आत्मा है और सबका सबको ज्ञान है। परन्तु क्या ऐसा होता है ? एककी बात का दूसरों को कानों कान पता नहीं होता, मन की बात जानना तो बहुत दूर की बात है। संसार के अनेक षडयन्त्र इसी आधार पर चलते हैं। एक ही क्षण में एक मनुष्य पाप कर्म करने की सोचता है, दूसरा पुण्य की। यदि आत्मा एक है तब एक ही समय में यह विषमता क्यों ?

हमें आश्चर्य है कि यह दार्शनिक ऐसे सरल और सीधे प्रश्न को इन निःसार भूल-भुलैयों में क्यों डालते हैं ? हमारा विश्वास है कि अन्य प्रश्नों की भांति आवागमन का सिद्धांत जीवों के अनेकत्व को प्रत्यक्ष रूप में प्रमाणित करता है। जो लोग एकात्मा मान कर इसकी विवेचना करना चाहते हैं वे अनावश्यक उलझनें उत्पन्न करके लोगों को भ्रम में डाल रहे हैं। अतएव यह सिद्धान्त कि आत्माएं अनेक हैं जो अपने कर्मानुसार फल भोगने के लिये विभिन्न दशाओं और योनियों में जन्म लेती रहती हैं, एक युक्ति युक्त सत्य है। ★

हमारे अन्य प्रकाशन !

१—ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप—

लेo श्री ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम' M. A. मू०)॥ दो पैसा मात्र, १०० प्रति लेने पर प्रचारार्थ लागत मात्र २) रु०

२—नित्यकर्मविधि—[पञ्च महायज्ञ विधिः] सम्पादक-ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम' M. A. मूल्य लागतमात्र ।) चार आना; २०) सैकड़ा ।

३—हमारा निराकार शत्रु—ले० श्री सन्तराम जी बी० ए० सम्पादक 'विश्वज्योति' मू०)॥ पैसा मात्र २॥) सैकड़ा

४—भारत में मूर्ति पूजा—(प्रेस में) [अपने विषय की एक अजोड़ कृति] ले० श्री प० राजेन्द्रजी (अतरौली) मूल्य लागत मात्र ।॥—) सजिल्द १—)

५—स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज—के सभी ग्रन्थ तथा ट्रैक्ट अविलम्ब लागत मात्र मूल्य पर प्रकाशित किये जावेंगे ।

विशेषज्ञातव्य—सार्वदेशिक तथा रामलाल कपूर ट्रस्ट के सभी प्रकाशन भी हमारे यहां से प्राप्त हो सकेंगे ।

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार, कृष्णगञ्ज मथुरा ।

पुस्तक मिलने का पता—

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार

कृष्णगङ्गा, मथुरा ।